जनवरी- मार्च 2026

दीया बाती

भोजपुरी, तिमाही, ई-पत्रिका

बरिस - एक
तिसरका अंक

आवरण- @ पाखल तोमर

सम्पादक-
डॉ. राजेन्द्र भारती

डॉ0 पारूल तोमर

हिसामपुर- बिजनौर

ई-मेलः parulvineet@gmail.com

डॉ पारूल तोमर

जन्म - 12 जनवरी 1973
हिसामपुर, जनपद - बिजनौर उ.प्र.
शिक्षा - एम0 ए0, पीएचडी हिन्दी

कार्यक्षेत्र -
इहां के साहित्य आ चित्रकला के क्षेत्र में सक्रिय बानी । साहित्य के लगभग मए विधा में रचनाशीलता ।

प्रकाशित कृति-
एगो कविता संग्रह 'संझाबाती' 2019 में प्रकाशित भइल बा ।
एकरा अलावा लगभग मए प्रमुख राष्ट्रीय आ अंतरराष्ट्रीय पत्र - पत्रिकन में रचना आ रेखाचित्र प्रकाशित भइल बा । अलग - अलग सांझा संग्रहन में संस्मरण, आलेख, व्यंग्य लेख आ कविता संकलित औरी आकाशवाणी से रचना आ साक्षात्कार प्रकाशित, प्रसारित भइल बा ।

इहां के भारतीय शिक्षा बोर्ड खातिर प्रस्तावित पुस्तकन खातिर रेखाकंन कइले बानी ।

ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस से भारत में प्रकाशित आ एन. सी. ई.आर. टी. द्वारा प्रस्तावित पाठ्क्रम (राष्ट्रीय पाठ्यचर्या - 2022 - 23) के अंतर्गत सी. बी. एस. ई. आ आई.सी. एस. ई. के पाठ्यक्रम खातिर हिन्दी विषय के पाठ्य पुस्तकन में कविता आ आलेख आइल बा ।

सूर सागर के चौपाइयन प आधारित, 12 बाल कृष्ण आकृतियां,
कविताकोश के वार्षिक कैलेंडर 2022 में प्रकाशित

पुरस्कार आ सम्मान-
विभिन्न साहित्यिक, सांस्कृतिक आ कला मंचन से सम्मानित - पुरस्कृत ।

वर्तमान में इहां के स्वतन्त्र लेखन आ चित्रकारिता क रहल बानी ।

दीया बाती

तिसरका अंक

जनवरी -मार्च 2026

तिमाही, भोजपुरी, ई-पत्रिका

संपादक
डॉ0 राजेंद्र भारती

सह संपादक
डॉ0 कादम्बिनी सिंह

प्रबंध संपादक
सुनील कुमार यादव

ग्राफिक्स
संदीप वर्मा

कंपोजिंग
सुनीता पर्वत

वेबसाइट संचालन
संत प्रकाश शर्मा

कानूनी सलाहकार - एडवोकेट श्वेता पाण्डेय मिश्र

आवरण चित्र
पारूल तोमर

ई-मेलः parulvineet@gmail.com

संपादन कार्यालय
C/O भारती दवा केन्द्र
अमृतपाली, सहरसपाली- बलिया
सचल दूरभाषः 7007319538

प्रकाशक- रेयर एयर फाउण्डेशन, बलिया

निहोरा –

अधिक से अधिक भोजपुरिया लोगन तक एह पत्रिका के पहुंच होखे, एकर सार्थक प्रयास के सहयोग चाहीं।

घोषणा –

1. पत्रिका में छपल लेख, कविता, कहानी, गीत, गजल, निबंध आदि विषय वस्तु के पूरा जिम्मेदारी लेखक लोग के बा। केवनो लेख से पत्रिका परिवार के सहमति होखे, ई जरूरी नइखे।

2. सब पद अवैतनिक।

डॉ. राजेन्द्र भारती

संपादक
दीया बाती

भोजपुरी, तिमाही, ई-पत्रिका

डॉ. राजेन्द्र भारती

भोजपुरी के विकास खातिर ई जरूरी बा कि भोजपुरी में जिए - मरे वाला रचनाधर्मी तनी सचेत होखो। पत्रिकन के काम बा स्तरीय रचना के पाठक तक पहुंचावल।

रचना अइसन होखो जेहके साहित्य के श्रेणी में राखल जाव, कवनो भाषा के साहित्य से वजन में कम ना होखे। काहें से कि अभी भोजपुरी में क्षेत्रियता के चलते कुछ छूट बा, कवनो मानक नइखे। कहीं 'बा', कहीं 'बाटे', कहीं 'आ' कहीं 'भा', एह तरीका के बहुतेरे उपयोग होत बा।

भोजपुरी के समृद्ध करे के जिम्मेदारी लिखनिहार प बा। सजग होखला के काम बा। काहें से कि स्तरीय रचना के अभाव में अंक निकाले में देरी होता, समय से अंक नइखे आ पावत।

भोजपुरी के ऊंचाई देवे खातिर हर विधा प ध्यान दिहल जरूरी बा।

आशा बा रउवां भविष्य में प्रत्येक मौसम, व्रत, त्यौहार के ध्यान में राख के दीया बाती के व्हाट्सएप नंबर 9839159190 प रचना भेजत रहब।

एह अंक के मुख्य पृष्ठ मशहूर साहित्यकार, चित्रकार पारुल तोमर जी के रचना ह। पारुल तोमर जी के दीया बाती परिवार की ओर से बहुत बहुत धन्यवाद आ आभार।

नवका साल सबके सुख, समृद्धि देवो ईहे कामना बा।

डॉ0 अमरेन्द्र पौत्स्यायन

जिला प्रोबेशन अधिकारी
बलिया

डॉ० अमरेन्द्र पौत्स्यायन

"दीया बाती" पत्रिका के तिसरका अंक के प्रकाशन पर पूरा संपादकीय परिवार आ सगरी पाठकन के ढेर सारा बधाई आ शुभकामना बा । पहिला आ दुसरका अंक के जवन प्यार, स्नेह आ सराहना पाठकन से मिलल, उहे हौसला बन के आज तिसरका अंक के रूप में सामने आइल बा । ई पत्रिका भोजपुरी भाषा, साहित्य, संस्कृति आ लोकजीवन के दीया जरावे के काम कर रहल बा, जवन सचमुच सराहनीय बा ।

आज के समय में जब मातृभाषा के अस्तित्व पर सवाल उठ रहल बा, तब "दीया बाती" जइसन प्रयास भोजपुरी के अस्मिता के बचावे आ अगिला पीढ़ी तक पहुँचावे में अहम भूमिका निभा रहल बा । एह अंक में समाहित रचना — कहानी, कविता, आलेख आ लोकसंस्कृति से जुड़ल विषय—पाठकन के सोच के नया दिशा देई, अइसन पूरा भरोसा बा ।

हम कामना करत बानी कि "दीया बाती" निरंतर प्रगति करे, नयका - नयका लेखकन के मंच दे आ भोजपुरी साहित्य के उजास घर - घर फैलावे । ई पत्रिका दीया बन के अँधियारा मिटावत रहे आ बाती बन के संस्कृति के लौ लगातार जलावत रहे — इहे हमार शुभेच्छा बा ।
"दीया बाती" के तिसरका अंक खातिर एक बार फिर से हार्दिक बधाई आ उज्ज्वल भविष्य के मंगलकामना ।

सभकर जय होखे !

कहवां का बा

शीर्षक	पन्ना क्रमांक
निबंध-	
1. बसंत पंचमी परब (जय प्रकाश तिवारी)	01
2. तोर धनवा मोर धनवा एक में मिलाओ रे (राजेश कुमार सिंह 'श्रेयस')	06
3. मकर संक्रांति (देव कुमार सिंह)	08
4. फगुआ (भगवती प्रसाद द्विवेदी)	10
5. शिवरात्रि (शशिप्रभा)	14
कहानी-	
1. सरग-नरक (डॉ0 सुशीला ओझा)	16
2. चमक चनरमा के जोती (डॉ0 शिप्रा मिश्रा)	18
3. सेहुँड़ आ कदंब (विष्णुदेव तिवारी)	20
4. माई जइसन बड़ भउजाई (विंध्याचल सिंह)	28
कविता-	
1. हुकुम बजाना (अनिरूद्ध कुमार सिंह)	31
2. आदिमी (कनक किशोर)	32
3. भोजपुरी के बराबरी भाषा दूसर करी ना (राम बहुदर राय)	33
4. भोजपुरी के मान्यता (शिवम तिवारी)	35
5. चाँन जइसन (शशिलता पाण्डेय सुभाषिनी)	36
6. किछु निछुटा नवा साल पः (डॉ0 एम.डी. सिंह)	38
7. पतोहिए मालिक बनल बिया (राजेन्द्र राज)	39
8. कुंडलियां (अनिल ओझा नीरद)	41
9. कहवां गइल ऊ दिन (अशोक वर्मा 'हमदर्द')	43
10. का होई (अंकुश्री)	46
11. जदि बुझा जाए (अंकुश्री)	47
गीत-	
1. इ सुना बतिया हमार (डॉ0 संगीता पाल)	48
2. हाय रे विधाता (डॉ0 जनार्दन चतुर्वेदी 'कश्यप')	50
3. अब धरती के जल जनि बाँट (डॉ0 जनार्दन चतुर्वेदी 'कश्यप')	52
4. झूमर (सुशीला पाल)	54
5. नदियन के दुर्दशा (शशिप्रेम देव)	55
6. काहें मोर झुराइल गाल (शशिप्रेम देव)	56
7. तार भइली जिनगी (बृजमोहन प्रसाद 'अनारी')	57
8. बाबू जी (शालिनी श्रीवास्तव)	58
गज़ल-	
1. नज़र (शालिनी श्रीवास्तव)	59
2. भँवर (मनोज भावुक)	60
लघु कथा-	
1. आंखीं देखल, कान से सुनल (सुनील कुमार यादव)	61
विविध-	
1. स्मृतिशेषः गंगा प्रसाद अरूण (राजेश भोजपुरिया)	63
2. भिखारी ठाकुर प पहिला शोध (नबीन कुमार)	66

जय प्रकाश तिवारी

बलिया / लखनऊ

सचल दूरभाष- 9453391020

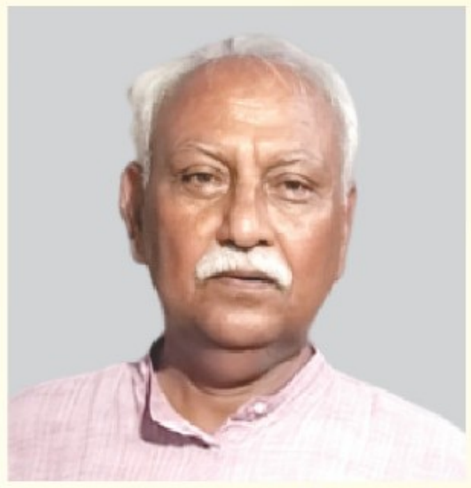

जय प्रकाश तिवारी

बसंत पंचमी परब

"बसंत पंचमी परब" सनातन धर्म के एगो उल्लास से भरल परब ह । ई "ऋतुराज बसंत" के आगमन प ओकर स्वागत में दिल खोल के मनावल जाला । मानव जीवन में उमंग आ खुशी तबे आवेला जब पेट अन्न से भरल होखे, देह निरोग होखे आ मौसम भी उत्साह देखावे लायक होखे, जेकरा में आदमी आपन ज्ञान, कला, सुर, लय आ ताल के धुन प थिरक सके, नाच सके, कुछ गा सके । आम के बागन में बौर के सुगंध से भरल मादकता के माहौल होखे, धरती मइया भी सौम्य ना रहके जब चंचला हो जाली, आपन रूप सुशीला वसुंधरा बन के जब आपन हरियर, पियर आ नीला... रंगीन चुनरी ओढ़ के सज-धज जाली, तब स्वस्थ तन-मन कब ले अपने आप के रोक पाई ? उहो मादक खुशबू में मस्त होके थिरकही लागेला । अइसन लोक - उल्लास से भरल ऋतुराज बसंत के स्वागत के परब ह ई "बसंत पंचमी" । ई परब माघ महीना में ऋतुअन के संधिकाल में मनावल जाला, जब जाड़ा के विदाई आ गरमी के आगमन के संधि बेला रहेला ।

बसंत पंचमी परब आ विज्ञान

"बसंत पंचमी परब" खगोल विज्ञान (ऋतु परिवर्तन) आ स्वास्थ्य विज्ञान दुनों से बहुत करीब से जुड़ल बा । जाड़ा के बाद बसंत ऋतु के आगमन, सरसों, अलसी, गेहूं, चना आदि के फसल के बहार आ प्रकृति के नवीनीकरण के प्रतीक ह ई परब । यदि भौतिक विज्ञान के नजर से देखल जाव त एह दिन सूरज के किरिन मन - मस्तिष्क प बहुत सकारात्मक असर डालेला; पियर रंग एकाग्रता आ आत्मविश्वास दुनों बढ़ावेला । स्वास्थ्य विज्ञान के हिसाब से एह समय वनस्पतियन आ औषधियन में स्वास्थ्यवर्धक बदलाव आवेला । खगोलीय विज्ञान के दृष्टि से ई परब माघ मास के पाँचवाँ दिन आवेला, जब प्राकृतिक जीवन में नया उल्लास पैदा होला । ई परब ठीक उहे समय आवेला जब शीत ऋतु खत्म हो जाले आ बसंत ऋतु के शुरुआत होखेला । एह परब के महत्व के अनेक शीर्षक के अंतर्गत देखल जा सकेला ।

(क) बसंत पंचमी आ सरस्वती माई

एह परब में उपासक के रूप में ज्ञान, कला आ संगीत के अधिष्ठात्री देवी माँ सरस्वती के पूजा - आराधना अनिवार्य रूप से कइल जाला । बसंत ऋतु पूरा - पूरा माई सरस्वती के ही समर्पित ह, आ होली, लोहणी जइसन परब पर नया फसल आ नववर्ष के स्वागत क के साधक समाज आपन पूर्णता पावेला । बसंत पंचमी के दिन पियर पियर

कपड़ा, रंगीन चुनरी धारण कइले से शुरुआत होखेला; ई कपड़ा तन - मन दूनो के गुलाल, अबीर आ होली गीत में झूमे के मौका देला । नया - नया मीठा व्यंजन आ पकवान खाके - खिआके, एक - दूसरा से गले मिलके, परिवार आ समाज के बड़ - बूढ़न से आशीर्वाद लिहल जाला । आ ई सब कुछ तबे पूरा मानल जाला जब समाज "माई सरस्वती" के पूजा - आराधना क लेला ।

(ख) सरस्वती पूजा ही काहे ?

"बसंत पंचमी परब" बसंत ऋतु के आगमन के उत्सव ह । जब प्रकृति में नया फूल खिलेला, सरसों के खेत पियर, अलसी नीला आ आम बौर से लद जाला, तब खास क के माई सरस्वती के ही पूजा काहे ? ई सवाल बुद्धिजीवी मन के बार - बार मथेला । एह सवाल के जवाब खातिर हमनी के सनातन संस्कृति के शरण लेवे के पड़ी । सनातन संस्कृति में "सरस्वती" शब्द के कई संकल्पना, अलग - अलग अर्थ आ भावार्थ मिलेला, जे सरस्वती के भौतिक, दैविक आ आध्यात्मिक रूप में प्रस्तुत करेला । आमतौर पर "बसंत पंचमी" के माई सरस्वती के जन्मोत्सव दिवस मानल जाला । ज्ञान, बुद्धि, कला, संगीत आ वाणी के अधिष्ठात्री देवी होखे के कारण एह गुणन के प्राप्ति खातिर सरस्वती के आराधना कइल जाला । बाकिर सरस्वती के परिचय एतने तक सीमित नइखे; शास्त्रन में उनका कहीं अधिक अधिक व्यापक रूप बतावल गइल बा ।

(ग) वेद में सरस्वती महिमा

दुनिया के सबसे पुरान ग्रंथ ऋग्वेद के तिसरका सूक्त के मंत्र संख्या 10, 11 आ 12 में सरस्वती के देवता रूप में वर्णन मिलेला । यजुर्वेद आ अथर्ववेद में भी सरस्वती के व्यापक चर्चा बा, जहाँ उनका भारती, वाणी, श्रद्धा आ इड़ा के रूप में पहिचानल गइल बा -

"सरस्वत्यश्विना भारतीडा ..." (यजु. 20. 63) ।

सरस्वती के पहचान एगो सर्वोपयोगी औषधि के रूप में भी मिलेला -

"भेषजं न: सरस्वती" (यजु. 20.63)।

सरस्वती के पंच ज्ञानेंद्रियन के ज्ञान प्रवाही नदियन के रूप में भी बतावल गइल बा —

"पंचनद्य: सरस्वतीमपि यंति..." (यजु. 34.11)।

सरस्वती के ज्ञान नदी कहल गइल बा, जे हर व्यक्ति के निर्मल, निष्कलुष आ निर्वैर बनावेली ।

यजुर्वेद आ अथर्ववेद में सरस्वती के वाणी आ मातृभाषा के अर्थ में भी चिन्हित कइल गइल बा — "तिस्त्रो देवी इड़ा सरस्वती मही भारती ..."

(अथर्व. 7.10.11)।

(घ) उपनिषद ग्रंथन में सरस्वती

"देवी उपनिषद" में सरस्वती के वैष्णवी आ स्कंदमाता पार्वती के साथ देवी त्रयी के रूप में गिनती कइल गइल बा — "कालरात्रि ब्रह्मा स्तुताम वैष्णवी स्कन्दमातरम् ।

सरस्वतीं अदिति दुहितरं नमाम: पावनाम शिवाम् ॥" (देवी उप. 6)

"सरस्वती रहस्योपनिषद" में उनका के "यज्ञं दधे सरस्वती" कह के उपासक, यजमान के भीतर यज्ञ के धारण करे वाली शक्ति बतावल गइल बा । एह के अलावा "निर्विकल्पात्मना व्यक्ता सा मा सरस्वती" जइसन उपयोगी कथन भी मिलेला । एह श्लोकन में देवी सरस्वती के स्वरुप के वर्णन करत उनका नमस्कार कइल गइल बा —

"चतुर्मुखंभोजवन हंसव धूर्मम् । मानसे रमतां नित्यं सर्व शुक्ल सरस्वती ॥
नमस्ते शारदे देवि काश्मीरपुर वासिनी ।
त्वमहं प्रार्थये नित्यं विद्यादानं च देहि में ॥" (1, 2)

एह के अलावा भी "एं अंबितमे नदीतमे देवित मे सरस्वती" कह के उनका नदी, देवी आ सरस्वती देवी — तीनों रुप में पुकारल गइल बा ।

अउरी कहीं त —

"अश्रुते बुध्यते ग्रंथ: प्राय: सारस्वत: कवि:।
इत्येवं निश्चयं विप्रा: सा हो वाच सरस्वती ॥" (सरस्वती रहस्योपनिषद 10, 11)

(ड.) पुराण ग्रंथन में सरस्वती

वेद और ब्राह्मण ग्रंथन में सरस्वती के वर्णन ज्ञान, बुद्धि, संगीत आ वाणी के देवी के रुप में, नदी आ ज्ञान बहावे वाली नदी के रुप में मिलेला, जे कुछ अमूर्त जइसन लागेला । बाकिर पुराणन में अइला के बाद उनकर वर्णन सृष्टिकर्ता ब्रह्मा जी के पत्नी, अर्धांगिनी के रुप में कइल गइल बा । सरस्वती जी ब्रह्मा जी के ज्ञान आ वाक् शक्ति बाड़ी ।

ऊ देवी कमल के फूल पर विराजमान, श्वेत वस्त्र धारण कइले, वीणा वादिनी, माला आ पुस्तक धारण कइले मूर्त रुप में विराजमान बाड़ी । अक्सर उनका वीणा, पुस्तक, माला आ जलपात्र धारण कइले देखावल जाला, जे विद्या, कला आ सृजन के प्रतीक हवे आ वेदन के रचना से जुड़ल मानल जाला । उनका के "नदीतमा" (नदियन में श्रेष्ठ) भी कहल जाला ।

बसंत पंचमी परब के दिन माई सरस्वती के एह मूर्त रुप के देवी के रुप में प्रतिष्ठापित कइल जाला आ इनकर पूजा - आराधना कइल जाला । उनका पूजा के मुख्य उद्देश्य अज्ञान से ज्ञान क ओर यात्रा ह — मति के सुमति आ बुद्धि के सद्बुद्धि बनावे के सम्यक विकास ह ।

(च). दुर्गा सप्तशती में सरस्वती

दुर्गा सप्तशती के पाँचवाँ से दसवाँ अध्याय ले देवी महासरस्वती के सात्विक रुप के वर्णन मिलेला, जहवाँ ऊ ब्रह्मा जी के शक्ति के रुप में प्रकट होखेली । ऊ आठ भुजा से युक्त बाड़ी आ शंख, चक्र, हल, त्रिशूल, धनुष, बाण जइसन अस्त्र-शस्त्र धारण कइले बाड़ी । ऊ शुंभ – निशुंभ जइसन दैत्यों के मर्दन करेली आ ब्रह्मा, विष्णु, महेश तक

के शक्ति प्रदान करेली । उहवाँ ऊ ज्ञान, बुद्धि आ आत्मज्ञान के अधिष्ठात्री देवी कहल गईल बाड़ी ।

सरस्वती जी के उत्पत्ति आ स्वरूप प चर्चा करत महासरस्वती जी के गौरी (दुर्गा) के शरीर से उत्पन्न बतावल गइल बा । ऊ अस्त्र - शस्त्र धारण करे वाली बाड़ी आ शुंभ–निशुंभ जइसन दैत्यन के संहार में उनकर प्रमुख भूमिका बतावल गइल बा । सप्तशती के पाँचवाँ अध्याय देवी सरस्वती के समर्पित बा, जहवाँ ऊ ज्ञान आ शक्ति देली आ राक्षसन के वध करेली ।

बाद के कालखंड में रचल गइल कई गो पौराणिक ग्रंथन में देवी सरस्वती के जगन्नियंता ब्रह्मा जी के अर्धांगिनी देवी के रूप में विस्तृत वर्णन मिलेला, जेकर साहित्य जगत में भी खूब प्रयोग भइल बा । एह तरह सनातन संस्कृति में देवी सरस्वती के ज्ञान, कला, संगीत, विद्या, शांति आ सद्गुणन के देवी के रूप में दृढ़ मान्यता बा । ई सब सद्गुण अइसन हवे जेकर जरूरत बच्चा से लेके बूढ़ा तक, कलाकार से अभियंता तक, विद्यार्थी से प्रोफेसर तक, संगीतज्ञ से वैज्ञानिक तक —सबके पड़ेला । एह से जनमानस बसंत पंचमी परब के दिन एह सद्गुणन के प्राप्ति खातिर माई सरस्वती के उपासना करेला ।

प्राचीन उपासना के श्लोक, स्तुति आ प्रार्थना के शब्द आज भले कुछ बदल गइल होखस, बाकिर भाव ना बदलल ।
महाप्राण निराला जी के रचना — "वर दे ! वीणावादिनी वर दे !"
जइसन कईगो प्रार्थना जनम लिहलस, स्वीकृत भइलीं आ गायन के माध्यम बन गइलीं; बाकिर इनकर मूल स्वर उहे
बा जवन प्राचीन ग्रंथन में मिलेला, जइसे —
"अध्यात्ममधिदैवं च देवानां सम्यगीश्वरी ।
प्रत्यगास्ते वदन्ती या सा मां पातु सरस्वती ॥"

एह मंत्र के भावार्थ ई ह कि जे हमरा भीतर, देवता लोग में, देवाधिपतियन में, भीतर - बाहर बसल दैवीय कल्याणकारी चेतन शक्ति बाड़ी; ऊ माई सरस्वती हमार रक्षा करसु, हमार समाज के कल्याण करसु -
"या वेदान्तार्थतत्त्वैकस्वरूपा परमार्थत: ।
नामरूपात्मना व्यक्ता सा मां पातु सरस्वति ॥"

अर्थात् जिनकर स्वभाव ही वेदान्त के सार तत्त्व ह, जे परमतत्त्व (आध्यात्मिक तत्त्व) हईं, जे परमार्थ रूप (भौतिक तत्त्व) हईं, आ जे नाम - रूप में प्रकट भइलीं (जागतिक तत्त्व) — ऊ करुणामयी माई सरस्वती हमार रक्षा करसु । इनका के सर्वांग पुष्टि कारक भी कहल गइल बा— "ॐ प्रणो देवि सरस्वती वाजेभिर्वाजेनीवती ।
धीनामवित्र्यवतु ॥"

अर्थात ॐकार स्वरूपा माई सरस्वती, पुष्टिकारक पदार्थ देवे वाली, विचार क पोषिका, उनका रक्षिका आ संवर्धिका हई हमनी के हरमेसा रक्षा करसु आ निरंतर कल्याण करत रहसु ।

एह तरह बसंत पंचमी परब के साथ देवी सरस्वती के आराधना अनिवार्य रूप से जुड़ गइल । पौराणिक

मान्यतानुसार बसंत पंचमी के माई सरस्वती के प्राकट्य दिवस मानल जाला, एह से एह परंपरा के अउरी बल मिलल । जइसे धार्मिक अनुष्ठान में प्रथम पूज्य विघ्नेश्वर गणेश जी मानल जालें, ओही तरीका से साहित्यिक आ संगीत के अनुष्ठान में माई सरस्वती ही प्रथम पूज्य आ उपास्य बाड़ी ।

गोस्वामी जी रामचरितमानस वंदना में "वंदे वाणी विनायकौ" लिखके भले सरस्वती आ गणेश दुनो के एक साथ रखलें हवे, बाकिर वाणी (सरस्वती) के गणेश से पहिले रखलें — काहेंकि ऊ जानत रहलें कि माई शारदे ही कवि के हृदय में विराजमान होके कवित्व कार्य संपन्न करावेली —
"कवि उर अजिर नचावहि वाणी ।" कवित्व एगो कार्य ह आ ई हर सामाजिक कार्य के प्रतिनिधित्व करेला ।

बसंत पंचमी उल्लास, उमंग आ संगीत प्रधान — लगभग एक महीना, होली तक चलने वाला माधुर्य परब ह । एह परब में हृदय पक्ष के प्रधानता देखे के मिलेला, बाकिर ऊ बुद्धि के अतिक्रमण ना करे; कर्म के विभत्स आ विकृत ना बनावे । उत्तर भारत में लोहणी परब भी उत्साह, उमंग, माधुर्य आ कृषि उत्पादन — अन्न के महत्व से जुड़ल उल्लास परब ह । लोहणी भी ऋतु परब ही ह ।

अंत में अब ई बात साफ हो गइल कि "बसंत पंचमी" परब में भले कई देवी - देवता आ अलग - अलग मान्यता होखें, तबहूं माई सरस्वती ही बसंत पंचमी के प्रमुख उपास्य आ आराध्य देवी काहे बाड़ी ! भोजपुरी गीतन के शुरुआत अक्सर अइसे होला —
"सुमिरी ले शारदा भवानी, अब पति राख महारानी ।"
फगुआ, चैती, चैता गीतन में भी "आहे सुरसती मइया...
कीर्तन में... भजन में... होखि ना सहाय... हे रामा..." जइसन पंक्ति मिलेली ।

पुरान होखे चाहे नया लोकगीत—लोक संगीत आ लोक परंपरा में देवी माई सरस्वती के मान्यता अडिग बा आ वैदिक काल से ई निरंतर चलत आ रहल बा ।
सब देशवासियन आ सनातन प्रेमियन के बसंत पंचमी परब के हार्दिक बधाई आ ढेर सारी शुभकामना बा ।

राजेश कुमार सिंह 'श्रेयस'

कवि, लेखक, समीक्षक

लखनऊ- उत्तर प्रदेश

राजेश कुमार सिंह 'श्रेयस'

तोर धनवा मोर धनवा एक में मिलाओ रे

जब मॉरीशस में गंगा तालाब पूज्य गंगा मां जईसन हो गइली
(मॉरीशस के हिंदी साहित्यकार श्री रामदेव धुरंधर से फ़ोन पर बातचीत)
(दुगो -दुगो परिवार, एगो संस्कृति एकही तीज त्यौहार)

भारत में विवाह संस्कार में वर और बधु दुगो पक्ष होलें । शादी के एगो रस्म जवने के हरदी धान बाँटल कहल जाला, में जब पहली बेरी दुनो पक्ष यानि दुनो परिवार मिले ले त भारतीय देसी अनाज (धान) अउर शुभ के चिंहा (हल्दी) के दुनु पक्ष अपने - अपने घर से गमछा में बांहि के ले आवेले। फिरु शुरु होला एहि रस्म के अदाएगी ।

शादी करावे वाला पंडित जी दुनू पक्ष के ले आइल हरदी धान के पहिले एके में मिला देलेन आ फेरु आधा - आधा बाँट के दुनहून पक्ष के वापस फेरि देलें।

भारतीय संस्कृति में बियाह में होखे वाली ए विधि का अर्थ ह, आयीं सभे एहि पर चर्चा कइल जाय !

एहि विधि के भाव के तनि एहि लेंगे समझीं -

ई बताई, का चाहियों के ई दुनो परिवार के लोगन के ले आइल अउर आपस में मिलि चुकल हरदी - धान, के फिरु से अलगा अलगा बाँटल जा सकेला ? अपना अपना हरदी - धान के चिंही के अलगा - अलगा फरियावल जा सकेला का ?

ई त बिल्कुले ना हो सकेला।

हमरा कहले के मतलब ई बा कि अब जब दुनो परिवार आपस में मिल गइले त ई रिश्ता जन्म - जन्मांतर के हो गइल । अब एके अलगा कइल मुश्किले ना बल्कि असंभव बा।

ए बात की चर्चा हम फोन पर मॉरीशस के साहित्यकार रामदेव जी से कइली ।
अब रउआ पूछेब कि इस बात के चर्चा उहाँ से काहें कइनी ? आयीं एहु बात के समुझल जाव -

अब रउआ पूछेब कि इस बात के चर्चा उहाँ से काहें कइनी ? आयीं एहु बात के समुझल जाव -

एक दिन उहाँ के यानि धुरंधर जी पूछली कि ए राजेश तोहरा हिहा शिवरात्रि कब ह ? त हम कहनी कि हमरे यहां शिवरात्रि 26 फरवरी के ह ।

त उँहा के कहनी कि हमरो हिहा मॉरीशस में शिवरात्रि 26 फरवरी के ह । देखि हम अपना घर के बहरा देखत बानी जे कइयों गो जवान लइका काँवर लेके गंगा तालाब की ओर जात बाड़े। ई सब गंगा तालाब जाई अउर उहाँ से जल लेंके शंकर जी के शिवलिंग पर चढ़ाई लोग ।

* मॉरीशस के गंगा तालाब का ह ??

रामदेव धुरंधर जी बतावे लें -

ई गंगा तालाब के शुरु में परी तालाब के नाव से जानल जात रहे। भारतीय लोग ओके परी तालाबे बोले। हमहूं कई गो किताब में ओके परी तालाबे लिखनी। बाद में भारतीय लोग (जेकर पूर्वज भा जे खुद भारत से मॉरीशस गइल रहे) उ भारत से गंगाजल ले आके बड़ा धार्मिक विधि विधान से परी तालाब के पानी में मिलवले लोग, अउर ओकर नाम गंगा तालाब रखि देहले ।

यानी परी तालाब के जल में गंगाजल मिल गइल अउर दुनो पानी ए गने घुल मिल गइल कि मानो दुनो एक हो गइल।
अब चाहियो के दुनो पानी के एक दूसरा से अलगा कइल जा सकेला का ?
एहि कारण से मॉरीशस में अब गंगा तालाब पूज्य गंगा माई जइसन हो गईल बा।

एकर मतलब इहो भइल कि भारत आ मॉरीशस दुन्हून के संस्कृति आपस में एहि तरे मिल गईल बे कि अब उ युग युगांतर तक अलगा ना हो सकेले।

रामदेव धुरंधर जी कहिले कि हम जब जवान रहली त पैदल त ना लेकिन साइकिल से 100 से कुछुवे कम किलोमीटर घर से उ जगह होई । हमनी का जायी जा। उहां से हमनी का घरे ना लौटके, बल्कि उहां से कुछ दूर आगे एक जगह रहे त्रयोलेट, उहाँ चल जाई जा ।

ओकरे जरिये हिंदी के एगो बडका साहित्यकार अभिमन्यु अनत जी के घर रहे। त्रयोलेट में एगो शिव मंदिर बा जेके महेश्वर नाथ जी के मंदिर कहल जाला । हमनी का गंगा तालाब से जल भर के ओही शिव लिंग पर चढ़ाई जा।

देव कुमार सिंह

पूर्व प्रधानाचार्य

मां कात्यायनी कॉलोनी, परिखरा,

तीखमपुर, बलिया, उत्तरप्रदेश

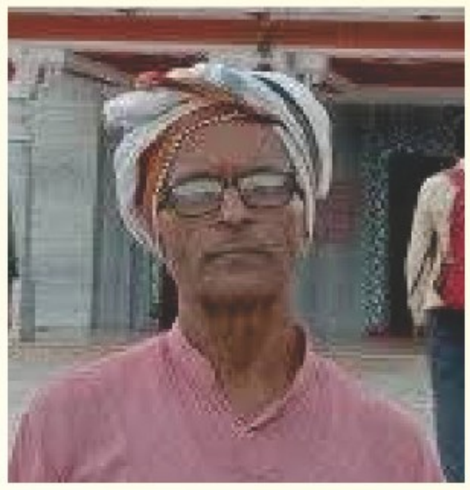

देव कुमार सिंह

मकर संक्रांति

मकर संक्रांति, खिचड़ी के पर्व पूरा भारत में कवनो ना कवनो नाम से मनावल जाला । पंजाब, हरियाणा में लोहणी पर्व आ दक्षिणी भारत में पोंगल पर्व के रूप में ई पर्व मनावल जाला । भगवान सूर्य जब कर्क रेखा से मकर रेखा प संक्रमण करे ले त ओ भौगोलिक स्थिति के मकर संक्रांति कहल जाला । एह पर्व के वैदिक काल से ही बड़ा धूमधाम से मनावे के परम्परा हमनी के देश में बा ।

एह दिन बालक, बूढ़, नौजवान सभे नहाला, गंगा नदी या जवन नदी नजदीक होखे ओ में डुबकी मार मार के, देह मलमल के, कई महीना के मईल छोड़ावल जाला । नहाके अपना पितर लोग के जल से तिलांजलि दिहल जाला, दान, पुण्य कईल जाला आ घरे आके हवन, होम करा के पंडी जी, बाबाजी, गरीब, भूखा लोग के प्रेम से दही, चिवड़ा, गुड़, तिल के लड्डू, तिलवा खिआवल जाला आ चले भर उनका गमछा में बान्हि के भोजन दक्षिणा दीआला । एकरा बाद पूरा परिवार के संगे कुश के आसनी प बैठ के, पलथी मार के सिकम भर दही चिवड़ा के भोग लगावल जाला । गांव में एगो कहावत प्रसिद्ध बा,"दही चिवड़ा बारह कोस लुच्चुई अठारह कोस।" अब ऊ कहावत, अधिकांश लोग के पेट के मरीज बन गईला से भूला गईल बा । अब केहू पुड़ी नईखे खाईल चाहत । काज परोज जईसे बलिया आ आसपास के जिला में एगो आईटम लिट्टी चोखा के रहेला ओ ही तरह छपरा, दरभंगा, पूरा बिहार में दही चिवड़ा के एगो आईटम जरूर रहेला । ई सुपाच्य भी है, पौष्टिक भी आ तनी गरिष्ठ भी ह, खाईला प ढेर देर ले भूख रोकेला ।

नब्बे के दशक के पहिले, संक्रांति पर्व के दस दिन पहिलही से चाय के दुकान पर दूध के चाय ना मिली, नींबू के ही चाय मिली । पूछला पर दुकानदार कही कि,"संक्रांति पर्व के चलते अब दुकान पर दूधहा भाई लोग दूध नईखे देत, का करी जा, नींबू के चाय पीहीं ।"

ऊ जमाना बीत गईल, अब सिंथेटिक युग में कहीं दूध, दही के कमी नईखे । एक दिन शाम वाली पैसेंजर ट्रेन से बनारस जात रहनी, हमार चाय पीए के बाउर लुतुफ पकड़ा गईल रहे । प्लेटफॉर्म नंबर तीन प एगो चाय बेचत रहे, एक कप चाय पीअनी । आतना बढ़िया लागल कि सोचनी, ई जरूर भैंस के दूध सामने दुहवा के ले आवत होई । फेर एक कप पीए के मन कईल । दुकानदार एक तसल्ली पानी खौलवलस आ अपना बगली से एगो पुचपुचिया लेखा टयूब निकाल के दू बूंद डाल देलस आ चाय पत्ती, चीनी डाल के चाय तैयार कर देलस । ई देख के मन उल्टी लेखा करे लागल । ओ ही दिन से बाहर चाय पीअल छोड़ देनी ।

मकर संक्रांति से सूर्य भगवान उत्तरायण हो जाले । श्रीमद् भागवत गीता में भी लिखल बा कि एह समय में शरीर छोड़ला प जीवात्मा के पुनर्जन्म ना होला, ओकर मोक्ष हो जाला, ऊ परम ब्रह्म में मिल जाला, ओकर आवागमन से छुटकारा हो जाला । भीष्म पितामह के इच्छा मृत्यु के वरदान मिलल रहे । महाभारत युद्ध सूर्य के दक्षिणायन काल में भईल रहे । महाभारत युद्ध में बुरी तरह घायल भईला के बाद बाण शैय्या पर सुतल सुतल सूर्य

के उत्तरायण होखे के इंतजार करत रहले । महाभारत युद्ध समाप्त हो गईल त अकेले मुअल लाशन के बीच में, एकदम सुनसान, कुकुर, सियार, गिद्ध, चील लाश के छीनाझपटी करस, ओ भयंकर वातावरण में भीष्म पितामह मकर संक्रांति, खिचड़ी पर्व, सूर्य के उत्तरायण होखे के इंतजार करत भगवान श्री कृष्ण के स्मरण करत रहले । मकर संक्रांति के दिन श्रीकृष्ण जी पांडव लोगन के संगे अईले तब ऊ आपन तन छोड़ले । एतना महत्व बा एह पर्व के । एह दिन से खरमास समाप्त हो जाला आ सब शुभ कार्य प्रारंभ हो जाला ।

मकर संक्रांति के दिन से लड़का, जवान आ बूढ़ लोग भी आकाश में पतंग उड़ावे लागेला । पतंगबाजी बहुत पहिले से एह दिन से जोर पकड़ ले ला । हमनी के त खरीफ के फसल कट गईला पर से पतंग, तिलंगी उड़ावल शुरु कर देत रहनी हा जा, मकई, ज्वार, बाजरा के खूंटी भी गड़ जाई । मुगल काल में एह पतंगबाजी के प्रचार प्रसार ढेर हो गईल, ई शाही शौक हो गईल ।

मकर संक्रांति के पर्व मनावे खातिर ब्याहुती बेटी, बहिन, फुआ के घर साड़ी, दामाद के धोती, तिलवा, चिवड़ा, गुड़, तिल के लड्डू, गजक गुड़ के बनल कांवर में भर भर के आदमी जन से पहुंचावे के परम्परा रहल हा । अब ई परम्परा धूमिल पड़ गईल बा ।

तीर्थराज प्रयाग में माघ मेला के आयोजन भी मकर संक्रांति पर्व के अवसर पर ही होला । छः बरस प अर्द्ध कुंभी आ बारह बरस प महाकुंभ लागेला । हरिद्वार, नासिक आ उज्जैन में भी अर्धकुंभी आ महाकुंभ लागेला । ई सब मेला मकर संक्रांति के महत्व ही दरसावत बा ।

मकर संक्रांति पर्व धूमधाम से मनाई सभे, दही चिवड़ा गुड़ मिला के बहुते प्रेम से खायीं सभे आ खिलायीं सभे । एह समय जाड़ा के पारा धीरे धीरे ऊपर उठे लागेला, मौसम बसंत ऋतु के बाग में टहलते टहलते आगे बढ़े लागेला, जाड़ा भागे लागेला । संक्रांति पर्व जब - जब आवेला हमरा पट्टीदारी में के एगो दादा जी के बात ईयाद आ जाला । ऊ साल में एके दिन संक्रांति पर्व पर ही नहात रहले ह । कुंआ, (भोजपुरी में हमनी के इनार भी कहेनी जा) के जगत यानी चबूतरा प बैठ के सरसों तेल गतर गतर मलिहें आ भुनभुनात रहीहें, "ई साली खिचड़िया आईले रहले, नहाही के पड़ेला ।"

मकर संक्रांति पर्व के दिन बाबा गोरखनाथ मंदिर में सबसे पहिले खिचड़ी चढ़ईहें । कई ट्रक चावल दाल के चढ़ावा मंदिर में मिलत रहल हा, अभियो ई परम्परा बा, बहुते भीड़ होला ।

मकर संक्रांति पर्व के एगो नाम खिचड़ी भी ह, दिन में दही चिवड़ा आ रात में खिचड़ी के भोग लगावे के परम्परा बा । तीन चार किसीम के दाल, चावल, अदरख, लहसुन, हरा मिर्च, आलू, टमाटर, मूली डाल के आ शुद्ध घी से छेवाँक के खिचड़ी एतना स्वादिष्ट बनेला कि लोग सिकम भर चढ़ा जाला ।

जय मकर संक्रांति, जय खिचड़ी, जय उत्तरायण पर्व ।

भगवती प्रसाद द्विवेदी

सर्जना, सृजनशील कालोनी, बिस्कुट फैक्ट्री रोड,
निकट मगध आईटीआई, नासरीगंज, दानापुर,
पटना - 801 503 (बिहार)
दूरभाष- 9304693031

भगवती प्रसाद द्विवेदी

फगुआ

रीत गइल मन के फिचुकारी
रस - रंग कहवाँ पाईं ?

अलमस्त फागुनी महीना । सरसों आ टेसू के फूलन से सजल - सँवरल, बसंती चुनरी झमकावत, लहरात - बलखात प्रकृति रानी । धूरि - गरदा के गुबार लेले छेड़छाड़ करत उतपाती पवन के झकोरा । लखराँव में आम के मोजर से टपकत मद - पराग । रस भरल महुआ के उज्जर - उज्जर मादक फूल । नयना में नेह जगावत पलाश, सेमर आ कचनार । कोइलर के 'कुहू - कुहू' के कूक । आलस के आलम । मन में फूटत बसंती कोंपड़ । का सचहूँ फागुन आ गइल ?

बाकिर आजु काहें नइखे लउकत ऊ फागुनी नजारा ? आखिर कहवाँ हेरा गइल कन्हैया के इंद्रधनुषी रंग से लबालब भरल फिचुकारी ? काहें नइखी नजर आवत भींजल चुनरी में सकुचात - लजात राधा ? रंग - रंगीली फुहार का जगहा ई सुखार काहें ? एक - दोसरा से चुहलबाजी आ मीठ छेड़खानी ! भादों के भींजल तन - मन के सुखावे खातिर आँचर के खोलि देबे के सलाह अब काहें नइखे देत कवनो रसिया ?

खोलि दऽ अँचरवा, लागे घाम
भादों के भींजल बा जोबनवा !

बसंत पंचमिए से त समहुत हो जात रहे फगुआ गावे के । बिरज, बरसाना आ वृंदावन से अलगा हटिके भोजपुरिया होरी के आपन खासियत रहल बा । छकिके एक - दोसरा से रंग - गुलाल, अबीर खेले आ बहुरंगी फगुआ गावे के खासियत । फागुनी पुरनवासी आ चइत के पहिलके दिन ले ना,

बुढ़वा मंगर ले फगुआ - जोगीरा के सरसता परवान चढ़ेला । गवैया गोल के गोल ढोलक, झाल, झाझ आ डफ लेले निकलि परेलन । एक - दोसरा से चुहलबाजी करत, रंग - अबीर खेलत फाग राग अलापे में मस्त नर - नारी।

अइसना में केकरा फिकिर बा राह - कुराह के ! जदी जाने - अनजाने लौंग के काँट गड़िओ गइल, त देवर आखिर कवना दिन - रात खातिर बाड़न ? ऊ त निकलबे करिहन । फेरु दरद के छूमंतर - अस भगावे वाला प्रियतमो त बाड़न -चले के रहिया त चललीं कुरहिया से

गड़ि गइले ना,
लवंगिया के कँटवा से गड़ि गइले ना !
देवरा ऊ कँटवा निकलिहें ननदिया
से पिया मोरे ना,
से हरिहें दरदिया से पिया मोरे ना !...

सम्मत जरावे माने होलिका दहन के नायाब प्रतीकात्मक परिपाटी । माघ सुदी पंचमी का दिनहीं से बाँस - बल्ला, लकड़ी, गोइँठा, फेंड़ - खूँट के डाढ़, तेलहन के तिलाठी, खर - पतवार वगैरा
तय चौक चौराहा पर जमा करेके होड़ । चोरा - चोरा के जुटावल लकड़ी के ढेरी से शुभ मुहूरत पर अगजा जरावे के रसम । हवन सामग्री का संगहीं नवान्न - बूँट के झेंगरी, गहूँ के बाली, नीम के पतई आ लरिकन के उबटन लगवला से निकलल मइल के सम्मत में डालिके उठत धुआँ के दिशा से नया सम्मत के शुभ - अशुभ के अंदाज । सरसों के तिलाठी बान्हिके मशाल जुलूस के शकल में जरत लुकाठी भाँजत गाँव के सिवान का बहरा फेंकि आइल आ सम्मत का बगल में बइठिके झलकूटन करत फगुआ गावे के मस्ती के का कहे के ! सम्मत जराके रोग - बियाध का संगहीं बैरभाव, मन के मइल, ईर्ष्या - द्वेष जइसन तमाम बुराई जरा दिहल गइली स । फेरु त मन चंगा हो गइल । दिल के कोना - अंतरा में लुकाइल काम - प्रवृत्ति मुखर हो उठल । आजु कवनो पाबंदी ना रहल । 'अररर भइया - सुनि लऽ मोर कबीर !' जोगीरा भा कबीर का जरिए अगर गारिओ दे देबऽ, त केहू अमनख थोरहीं मानी -

गारी के भइया हो, बुरा न मनिहऽ
होरी हऽ भई होरी हऽ !

धूरखेली आ रंगन के छटा का संगहीं कीच - कादो, धूरि - गोबर आ गारी - गलौज । बूढ़ का संगें जवान मेहरारू के देवर - भउजाई के नेह - नाता ।सूतल मनोभाव के जगावे आ उगिले के होड़ । दोसरा ओरि राधा - किसुन के परेम में पगल निश्छल होरी -

इत से निकली नवल राधिका
उत से कुँवर कन्हाई,
खेलत फाग परस्पर हिलि - मिलि
सोभा बरनि न जाई
घरे - घरे बाजे बधाई
ब्रज में हरि होरी मचाई !

खाली अतने ना, खेलत किस्ना जी के गेना जमुना में गिर गइल ।
फेरु त ऊ जमुना में कूदि गइलन आ नदी में नहात राधिका के अँगिया में हाथ डालिके गेना खोजे लगलन आ खुश हो गइलन कि एगो गेना भुलाइल, बाकिर दूगो भेंटा गइल ! एने राधा परेशान कि उन्हुका पर चोरी के इल्जाम !

खेलत गेंद गिरे जमुना में
के मोरा गेंद चोराई,
हाथ डालि अँगिया बीचे ढूँढ़त
एक गयो दुई पाई
लाल मो पे चोरी लगाई,
ब्रज में हरि होरी मचाई !

रस भरल होरी में रसलोलुप पाखियन के उड़ान आसमान छूवेला । अगर सोझ - सपाट मरद घोड़ा बेचिके सूतल रही आ कवनो रसिया कागा यौवन - रस लुटला का संगहीं नकबेसरो लेके उड़न - छू हो जाई, त मेहरारू बेचारी का करी ! अइसन अभागा पियक्कड़ पति के नींन के अइसन - तइसन !

नकबेसर कागा ले भागा
सइयाँ अभागा ना जागा
उड़ि -उड़ि कागा कदम पर बैठा
जोबन का रस ले भागा
सइयाँ अभागा ना जागा !

मुँह, आँख, चुनरी - किछऊ त बाकी ना रहल । बसंती हवा के छुअन अंग - प्रत्यंग सिहरा देत बा राधिका के । ओहू पर श्याम के फिचुकारी के धार । राधा के हाल बेहाल ।
ऊ मने - मन निहाल होत कहत बाड़ी -'मत मारो श्याम पिचकारी !' जदी एहू प कान्हा नइखन मानत, त माई जसोदा से शिकायत करहीं के परी ।

बाकिर आजु ई कइसन बदलाव ? फागुन आके चुपचाप चलल जा रहल बा । एक ओरि किसिम - किसिम के आफत - बिपत, दोसरा ओरि आम अदिमी के तंगी - तबाही । सुरसा - अस मुँह बवले महँगी के मार आ दिमागी तनाव से त्रस्त समाज । तबे नू आजु नइखे फूटत आनंद के रससिक्त कऽ देबे वाला उद्गार - निश्छल भाव से फागुनी शुभकामना-

सदा आनंद रहे एहि द्वारे
मोहन खेले होरी !

कतहीं होलिका - दहने में हमनीं के हर्षोल्लास, उत्साह आ सांस्कृतिक चेतना के त ना जरा दिहलीं जा ? तबे नू नइखे फूटत साँच मन से सिंगार के होली - गीत !
साइत हिरदया के फिचुकारी में अब रंगे नइखे बाँचल । दिल रसहीन हो गइल बा ।
फेरु का सिंगार, का हास, का हर्षोल्लास आ का होरी !

रीत गइल मन के फिचुकारी,
रस - रंग कहवाँ पाईं ?

आखिर कब तक हमनीं के नशा में धुत्त होके, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के आयातित अपसंस्कृति में आपन सुध - बुध खो के गौरवान्वित होत रहबि जा ? कब लवटबि जा कुदरत आ कृत्रिमता से सहजता का ओरि ? आखिर कब मन परी जिनिगी से गहिरे जुड़ल आपन सांस्कृतिक धरोहर - होरी ?

तनी मुड़िके देखीं, जिनिगी में हर्षोल्लास, उमंग के इंद्रधनुषी रंग भरे खातिर होरी - फगुआ के मदमस्त चितवन राउर पीछा करत बा । तनी सम्हरि के - फागुन महिनवा आइल सुदिनवा -- !

शशिप्रभा
बड़हलगंज- गोरखपुर

शशिप्रभा

सिवराति

भारत के सांस्कृतिक आ धार्मिक परंपरा में महाशिवरात्रि के विशेष महत्व बा । ई पर्व भगवान शिव के समर्पित बा, जेकरा के भोलेनाथ, महादेव, नीलकंठ, शंकर, बम - बम भोले जइसन अनेकन नाम से जानल जाला । शिवरात्रि खाली एगो त्योहार ना, बलुक ई आत्मचिंतन, संयम, साधना आ भक्ति के महापर्व ह । खास क के उत्तर भारत, बिहार, पूर्वांचल आ नेपाल के तराई इलाका में ई पर्व बहुत धूमधाम से मनावल जाला ।

"शिव" के मतलब होला कल्याण आ "रात्रि" के मतलब होला अंधकार । यानी शिवरात्रि अज्ञान रूपी अंधकार से ज्ञान रूपी प्रकाश क ओर जाए के प्रतीक ह । मान्यता बा कि ई रात भगवान शिव के सबसे प्रिय रात ह, एह दिन उनकर पूजा - अर्चना कइला से मनोकामना पूरा होला आ जीवन में सुख - शांति आवेला ।

धार्मिक ग्रंथन के अनुसार, महाशिवरात्रि के दिन ही भगवान शिव आ माता पार्वती के विआह भइल रहे । एही से ई दिन दांपत्य जीवन में सुख, समृद्धि आ विश्वास बढ़ावे वाला मानल जाला ।

शिवरात्रि से जुड़ल कई गो पौराणिक कथा बा । एगो प्रमुख कथा समुद्र मंथन से जुड़ल बा । जब देवता आ असुर समुद्र मंथन करत रहलें, तब हलाहल विष निकसल, जवन सृष्टि के नाश कर सकत रहल । तब भगवान शिव ओ विष के अपना कंठ में धारण कइलें, जेह से उनकर कंठ नीला पड़ गइल आ ऊ नीलकंठ कहलाए लगलें । एह महान त्याग के स्मृति में शिवरात्रि मनावल जाला ।

दूसर कथा के अनुसार, एह दिन शिवलिंग के पहिला बेर प्राकट्य भइल रहे । मान्यता बा कि भगवान शिव निराकार से साकार रूप में शिवलिंग के रूप में प्रकट भइलें । एहसे शिवलिंग पूजा के विशेष महत्व बा ।

शिवलिंग पूजा के महत्व

शिवलिंग भगवान शिव के निराकार रूप के प्रतीक ह । शिवरात्रि के दिन शिवलिंग पर जल, दूध, दही, घी, शहद, गंगाजल, बेलपत्र, धतूरा, भांग आ आक के फूल चढ़ावल जाला । बेलपत्र खास महत्व रखेला, काहे कि ई भगवान शिव के बहुत प्रिय मानल जाला ।

ग्रामीण इलाकन में लोग भोरे - भोरे नदी, तालाब भा कुआँ से जल ले आवेला आ "हर हर महादेव" के जयकारा लगावत शिव मंदिर में पूजा करेला ।

महाशिवरात्रि के दिन व्रत रखे के परंपरा बहुत पुरान बा । कई लोग निर्जला व्रत रखेला, त कुछ लोग फलाहार करेला । मान्यता बा कि शिवरात्रि के व्रत से मन, शरीर आ आत्मा तीनों शुद्ध होला ।

भोजपुरी अंचल में खासकर औरत शिवरात्रि के व्रत बहुत श्रद्धा से रखेली । कुंवारी कन्या लो नीमन वर पावे खातिर आ बिअहल औरत अपना पति के लंबा उमिर खातिर व्रत रखेली ।

शिवरात्रि के खास परंपरा रातभर के जगरम ह । एह रात भर लोग जाग के भगवान शिव के भजन,

कीर्तन, कथा आ आरती करेला । "बम बम भोले, ॐ नम: शिवाय" के गूंज से पूरा वातावरण शिवमय हो जाला । कई जगह प लोक कलाकार शिव भजन, निर्गुण आ कजरी शैली में गीत गावेले । ढोलक, मंजीरा आ झांझ के साथ गावल गइल भजन से माहौल भक्तिमय हो जाला ।

ग्रामीण समाज में शिवरात्रि के किसान जीवन से भी गहरा संबंध बा । फागुन महीना में पड़ेला ई पर्व, जब रबी फसल पक के तैयार होखे लागेला । किसान भगवान शिव से अच्छा फसल, समय पर बारिश आ आपदा से रक्षा के प्रार्थना करेला ।

कई गाँव में शिवरात्रि के दिन मेला लागेला, जहवां खिलौना, मिठाई, चूड़ा, बताशा, बेलपत्र आ पूजा सामग्री के दुकान सजेले ।

शिवरात्रि खाली धार्मिक पर्व ना, बलुक सामाजिक एकता के भी प्रतीक ह । एह दिन अमीर - गरीब, ऊँच - नीच के भेद मिट जाला । सब लोग एक साथ मंदिर में पूजा करेला, प्रसाद बाँटेला आ एक - दूसरा के शिवरात्रि के शुभकामना देला ।

शिव के व्यक्तित्व में वैराग्य आ करुणा दुनों के समन्वय लउकेला । ऊ कैलाश पर भी रहेलें आ श्मशान में भी, साधु - संत के भी देवता हउवें आ गृहस्थन के भी । एहसे शिव सबके हउवें – गरीब के, अमीर के, स्त्री के, पुरुष के ।

आज के आधुनिक जीवन में भी शिवरात्रि के महत्व कम नइखे भइल । शहर में भी लोग ऑनलाइन पूजा, लाइव आरती आ डिजिटल भजन के माध्यम से भगवान शिव से जुड़ रहल बा । हालांकि, असली आनंद तबे आवेला जब श्रद्धा आ विश्वास के साथ पूजा कइल जाव ।

युवा खातिर शिवरात्रि आत्मसंयम, नशा - मुक्ति आ सकारात्मक जीवन के संदेश देला । भगवान शिव खुद तपस्या, ध्यान आ संतुलन के प्रतीक हउवें ।

अंत में कहल जा सकेला कि महाशिवरात्रि केवल एगो पर्व ना, बलुक जीवन जीए के तरीका सिखावे वाला दिन ह । ई हमनी के सिखावेला कि त्याग, तपस्या, सत्य आ करुणा से जीवन के ऊँचाई छूअल जा सकेला ।

!! ॐ साम्ब सदाशिवाय नम: !!

डॉ. सुशीला ओझा

पूर्व विभागाध्यक्ष

हिन्दी विभाग,

माहेश्वनाथ महामाया महिला महाविद्यालय

पश्चिमी चम्पारण- बिहार

डॉ. सुशीला ओझा

सरग - नरक

एगो त दुबर - पातर, कूबर निकलल, करिया - काबर, बाँस खनिया भोथर बोली..। कौनो लाग लपेट ना..। खाली पइसा ओकर भगवान रहलें । ओही में दिन रात लागल रहत रहे । कौनो बिधि पइसा आए के चाहीं । पइसा अइसन चीज ह कि ओकरा आगे.. लोक, सास्तर, घर - पलिवार, समाज, सब बेकार लउके लागेला । माने दिन भर, हे सिवाला से हो सिवाला.. सीतला माई के गोहरावत रहे ! मानुस जनम लेके.. मानुस के मन... मानुस के धरम , करतब से ओकरा कवनो मतलब ना रहे । माई बेर - बेर चेतावे - पहिले 'क' अछर पढ़ल जाला.. ओकर माने होला करतब... तब "ख" अछर आवेला.. कि अब खा । जब करतब ना करी केहू त खाई का?

खाली माई.. महादेव के पूजत रहे कुसुमी... ! एकरे से भागवान खुस होइहें त छपर फार के दिहें । ओकरा सास - ससुर के खईला बिना अँतड़ी अईंठात रही.. । बाकिर पूजा त पूजा ह । पूजा पर से उठते - उठते त सब मंतर भुला जाला । सास - ससुर के कोठरी में माछी भिनकत रही, बसना के मारे घर में केहु ढुके ना । केहु तरे खयका फेंक के चल आई ।मल - मूत से कोठरी बसात रही । मने ओकरा अपना पूजा से कहिओ फुरसत ना रही । दुआरी प नीम के पाता टांग दी कि बुढ़वा - बुढ़िया के बेमारी - सेमारी ना पाटे । बड़ा फुहर - फसाक बा लोग । बिछौने पर कचाहिन क देता लोग, कहे के ना चाहीं ? आ जब बुढ़वा - बुढ़िया बोलईहन स त पूजा के बहाना क के निकल जाई । कबो उ लोग के हाथ अईंठ दी, कबो चटाचट मारे लागी.. । बुढ़वा - बुढ़िया कपसल रहिहन सन ।केहु के, लगे ना जाए दी । कबो केहु गलती से चल जाई ... त बुढ़वा - बुढ़िया कलप - कलप के छव - छव पाती रोइहन सन । किरिया धरइहन सन... कुसुमी से मत कहिह लोग ना त हमनी के मारे लागी !

एगो त सउसे देह में खाली हडिए बा, बाड़ा चोट लागेला । फालिस मारल देह में बचहूं के कवनो असरा नईखे । हमनी के बड़ा गजन करेले । चाभी लेके... सब गहना - गुरिया, रोपेया - पइसा ले ले बिया । कबो मन करेला कुछु खाए के त केकरा से कहीं ? तरकारी में नून - मरीचा हुर देले..। भुजा खनिया भात..चईली खनिया रोटी, खाईल ना जाला । नून - मरिचा मुँह में जाएला त तीनों तिरलोक लउके लागेला । दाँत हलही नईखे ..भूजा खनिया भात, ना घोटाला... । रोटिया चईली खनिया... काल्ला छिला जाला । हेतना दूध खातिर त बभनी बिया जाला । इ सब रोजगार हमनी के मुआवे खतिरा होता । का जाने दईब कहाँ सुतल बाड़े ? जिनगी पहाड़ हो गईल बा । जिनिगिये में सब सह लेवे के बा, सरग - नरक सब ईहें बा । बुढ़ऊ के पनरे हजार पिनसिल मिलेला । कौना काम के उ पिनसिल ?...जब जाँगर ना रहे त भागवान उठा लेते...नरक में परल बानी सन... । खइला - खइला बिनु परान अइंठाता... । एगो आदमियों रखवा के सेवा - टहल करवा दिहितन सन । बिछौना बदल देते सन...नसे नस बन क देले बाड़ेन सन

। हाकिमों खोराकी ना रोकेला...। पिनसिल के दिने ...पीठि पर बोझ के ले जाले सन...आ पिनसिल अपना हाथ में ले के मालिक हो जाले सन आ बुढ़वा - बुढ़िया के काल कोठरी में डाल देले सन...!

अइसन काल कोठरी में बानी सन कि एगो चिरईयो खातिर मनवा छछात रहेला... फोनवो पर कुछू बतियावल मने बा...। हमरे पइसा से फोन में पइसा भराला । हमरा से फोन छीन लेले बाड़े सन । बुढ़उ, दूध मंगाएलें.. उहो पियल मसकिल बा । एगो त कुछु पचाए के सकति कम हो गइल बा । ओपर से मरछिया दूधो के चोरी लगावेले... । आधा किलो दूध मंगाएले...ओकरा के सिकहर पर टाँगेले... बुढ़वा - बुढ़िया चोरा लिहन सन...। दूध पीअला से अजर - अमर हो जइहन सन... ।रुनी...आम ..जामुन..फेनसा सब हमनी के लगवले बानी सन...बाकिर..एगो मुँह में ना परेला...। कुसुमी त दोसरा जघे के हिय..। अपने जमालका जब....मुदई खनिया हो गइल बा त केकरा के दोख दी..? बेद...सासतर..सब झूठ उचरता..!

हमनी बुढ़ा - बुढ़ी के अलगे क देले बाड़न सन । कहेले सन - बाप रे बाप..! हई बुढ़वा - बुढ़िया के देख, लोल में लोल सटा के बतिआवत बाड़े सन । सारी घर भरभट कर देले सन । जिनगी भर का कइले बा लोग ..? खाली बेटी के घर भरले बा लोग...। कीरा नु पड़ी तहन लोग के देह में...। हे तरे बुढ़वा - बुढ़िया के अन्हारा कोठरी में बन्द कईले बाड़े सन । जहँवा ना सूरुज के किरिन लउकेला ना हवा - बेयार आएला । सगरी पहरा गड़ले बाड़ेन सन..!

कुसुमी काम के डरे पूजा करे ले । सिलाई करेले, ऊहो मसीनवा बुढ़वा - बुढ़िया के पईसे से किनाईल बा । बाप - महतारी त गांगा होला । लइका सन केतनो गलती करीहन सन तबो हिरदया में ओकरा खातिर कवनो मइल ना रहेला...। कहीं रह सन, नीमन से रह सन.. लेकिन एक बात मनवा में घूमत रहेला । गांगा घाटे जा के एक बेर घाट के मन से पूज के नहाए के पड़ी..। गांगा माई से पुछे के बा कि कवन गलती भइल बा कि इ दिन देखे के परता ? तब जाके कहीं हमनी के सब गलती गांगा माई धोइहन..। कौनो पूजा पाठ , कुछ कहीं नइखे..। सबसे बड़का असीरबाद त माई के अंचरा में बा...! एक बेर ओ अंचरा में मुँह पोछ के...असिरबाद लेवे के परी...। अपना के पछताप के आगि में जरावे के परी । आदमी ह त, गलती होखबे करेला...। ओ गलती के माने के परी...आ संकलप लेवे के परी कि अब दोहरा के अइसन गलती ना होई । केकई माता ले आपन गलती, राम के समना सकरले बाड़ी...!

आदमी के बिकास के गाड़ी जब जाम हो जाला... त ओमे आदर - सेवा के तेल लगाके... पहिआ आगे बढ़ावे के चाहीं । पहिआ साथे - साथे दउरेला । ओकरा के चलावे .. खतिरा एगो छोट चुकी कांटी होला...। उहे पहिया के चलावेला । बाकिर कंटिया लुकाईल रहेला... त लोग ओकरा के देखबे ना करेला...!

सबके साथे लेके चलला से बिकास दउरेला... एहिसे कहल जाला - "सबकर साथ सबकर बिकास...।" आगे पर बढ़े खतिरा सबकर सहजोग...आदर...परेम ..बिसवास..के जरूरत पड़ेला । तब जाके जिनगी डगरेला...। कहल जाला -"अकेल चाना भड़वो ना फोरेला।" अकेल रही त भुजहीं में जर जाई ।

एह पर अकेले में ते ठांढा देमाग से सोचिहे, कुसुमी ...! तेहु एक दिन बूढ़ होखबे....हमनी के त पिनसिल मिलता त इ हाल बा...! तोरा त पिनसिलो ना मिली...। बुढ़ारी कौना गढ़ई में गिरी के जानता..??

डॉ. शिप्रा मिश्रा

कोलकाता

डॉ. शिप्रा मिश्रा

चमक चनरमा के जोती

आज हम बड़ा खूस बानीं । पूछीं काहें ?

हमरा गऊँआ में एगो बियाह बा.. मलिकाइन कीहां । क दिन निमन से खईला भईल बा । आजु राति ओही जा जाएम । पहिले से ना जाएम त ओहू जा बड़ा मारामारी बा । अधेसरा, नौलखिया, बटुलिया, सिकनरा.. पहिलही से बोरा - झोरि ले के बईठल रहेलें सन । सुने में आईल ह कि मछरी के भोज - भात बा । केतना मूड़ा पछिला बेर बिगाईल रहे । दू दिन मतारी बेटा खईनीं सन । सरधवा त खईबे ना करेले । लागेले चिघरे - "आई हो दादा ! काँट गड़ता ।"

काल दोकाने कार करे ना जाएम । तनिको कुछू गबड़ाएला त बड़ा मारेलन सेठऊ । बाकिर उपाए का बा ! हमार बाबू त कहियने ओरा गईलें । दारू - ताड़ी पीयत पीयत टीबी उपटा लेहले रहलन । माई गहना - बीखो बेंच - बेंच केतना ओझा - गुनी कईलस तबो लिलार के टिकुलिया ना बाचल ।

भोजवा में क गो चीज लोग बीगेला - पूड़ी, तकारी, जुठियावल इमिरती, मछरी । क दिन निरईठ अन खईले भईल बा । सगरी जवार गमकता । आजु भोरहीं से जीभ पनियाईल बा । रसवा त सारे बह जाला तबो दू दिन ले खानी सन । ओतनो खतिरा सिपहियन के खईनी खियावे के परेला । बाकिर कवनो उपाए नईखे ।

ओही से आज हम बड़ा खूस बानीं । आजन - बाजन बाजता काले से । माई गईल बीया हरदी कूटे । पाँच रोपेया नेछावरो मिलल ह ।

माई दिन - दिन भर गऊँआ में फटकल - चालल करेले । कबो - कबो खुद्दी - उद्दी ले आवेले । दू - चार दिन डभका के चल जाला । जहिया दोकनिया प ना जानीं तहिया अईंठा केकड़ा बिन ले आवेनी । कबो - कबो सिंधरी, पोठियो भेंटा जाला ।

जानतानीं ! हमरा दोकनिया पर जाएके मन ना करेला । सेठऊ बड़ा लप्पड़ चलावेलन । कनबजा भड़का देवेलन । कए दिन ले कनवा बिसबिसात रहेला । कहियो कहियो त घरे लेले चल जालन । बरतन मजवावेलन, झाड़ू लगवावेलन । बड़ा बिपत बा । जानतानी हमरो मन करेला पढ़े जाईं, खूबे खेलीं, गाछी पर चढ़ीं । बाकिर का करीं ! हमरा भगिये में जूठ - काँठ लिखा गईल बा ।

माई बड़ा हूक में रहेले । सरधवा के रहे रहे भूत उपट जाला । उखिन - बिखिन करे लागेले । माई कहेले ए मुँहझऊंसिन से के बियाह करी ! एक दिन सहरिया से सेठऊ एगो आमदी लेके आईल रहलन । ऊ अमदिया कहत रहे -"ए बेटी का बियाह हम से करवा दो ! बहुते पईसा देगा ।"

मने माई त ठान देहलस -"हमरा ना धन जुरी त हम ए छऊड़ी के ईनार में बीग देब बाकिर तोहरा से त कहियो ना बियहेब अभगऊ !"

हम त भकचका के ताकते रह गईनीं । हमरा त बुझाईल कि माई बियाह करी त पईसा मिली । कुछ दिन तनी हिक भर खाईल पियल जाईत । बाकिर बाद में मतारी बड़ा समझवलस ।

हम आज बड़ा खूस बानीं । दू दिन से दोकनिया पर नईखीं जात । भोजवा में से बड़ा चीज ले आईल बानीं । पत्तल झार - झार के । ओमे एगो बड़ी बड़का आमदी आईल रहे । कहत रहे -"का कचरा बीन रहा है ! स्कूल केओं नहीं जाता ? तुम केतना बसा रहा है ? नहाता नहीं है रे !"

हम का कहें.."द ना सबुनिया किन के ! तबे नु नहाएगा ! पहिले खाएँ आकि नहाएँ !"

ऊ आमदी बड़ा निमन रहे । हमरा के घरे बोलवलें । कहलें कि माई के संगे आव बिहान ।

हम आजू बड़ा खूस बानीं । पूछ काहे !

अब हम स्कूल जाएम । माई के ओही स्कूलिया में भात बनाए के कार मिल गईल बा । आ सरधवो के पढ़े के सुविस्तो हो गईल बा ।

साचों काका आजू हम बाड़ा खूस बानीं । अब हम लखेरा ना बनेम । अब हम जूठ - काँठ ना बटोरेम । अब हमार देहियाँ ना बसाई । हमार बहिनियो के भूत अब उतर गईल बा ।

आजू हम बाड़ा खूस बानीं ।

एक दिन,
मेरे पास सबकुछ होगा–
अपना घर, कार दौलत,
और एक शानदार
रिटायरमेंट।

बहुत बढ़िया!
लेकिन वह "एक दिन" तभी
आएगा जब आप म्यूचुअल फंड्स
में अपना SIP शूरु करेंगें।

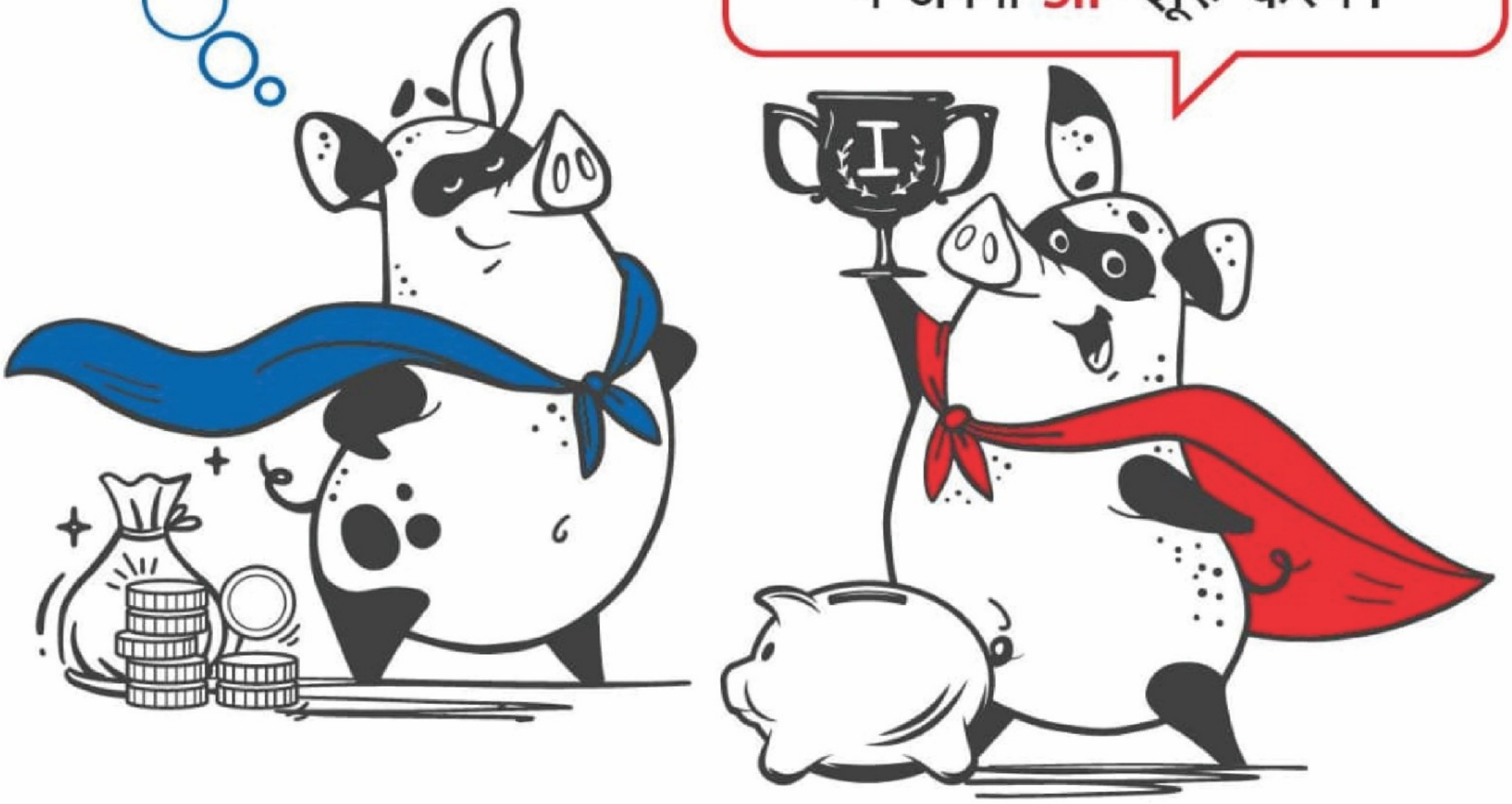

25 साल पहले
शुरु की गई **₹25,000**
की मासिक **SIP**

कुल
निवेशित राशि:
₹75 लाख

आज तक का
अनुमानित कोष:
₹4.70* करोड़

SUNIL KUMAR YADAV

*यह माना गया है कि इक्विटी फंड में निवेश किया गया और एएमएफआई (AMFI) बेस्ट प्रैक्टिसेस गाइडलाइन्स सर्कुलर क्रमांक 135/BP/109-A/2024-25 दिनांक 10 सितंबर 2024 के अनुसार औसत रिटर्न 12.62% प्र.व. रहा है।

म्यूचुअल फंड्स में अपनी **SIP** शूरु करने के लिए **हमसे संपर्क करें।**

म्यूचुअल फड्स मे सिस्टेमेटिक इन्वेस्टमेट प्लान (SIP)

Powered by NJ

अस्वीकरण: आँकड़े/पूर्वानुमान केवल उदाहरण के प्रयोजन के लिए हैं। स्थितियाँ/परिणाम भविष्य में साकार हो भी सकते हैं और नहीं भी। म्यूचुअल फंड निवेश बाज़ार जोखिमों के अधीन हैं, सभी स्कीम संबंधी दस्तावेज़ों को ध्यान से पढ़ें। पिछला प्रदर्शन भविष्य में कायम रह सकता है या शायद न भी रहे और यह किसी भावी रिटर्न की गारंटी नहीं है।

SUNIL KUMAR YADAV
MOBILE: 9839159190
Email: SKYAASNOLIMIT@GMAIL.COM

विष्णुदेव तिवारी

बक्सर- बिहार

विष्णुदेव तिवारी

सेहुँड़ आ कदंब

ऊ हमरा बहुते नीक लागत रहली ।

एक दिन सब हिचक आ डर टार के हम उनुका सामने खाड़ हो गइलीं । पहिले चारू ओर तिकड़ लेले रहीं । केहू नगीच - पास ना रहे । ऊ ऊपर खाड़ रहली आ हम एकदम से नीचे – अंतिम सीढ़ी से एक सीढ़ी ऊपर ।

– तहार नाँव कालिंदी ह नूं ?... हम जानत बानीं ।

ऊ हमरा के आँख गँड़ोर के देखली । हमार हियाव काँप गइल । हमरा लागल उहो तनिकी - सा काँप गइल रहली तबो निठुरी मुँहे कहली, 'तोहरा से मतलब ? हम कलिंदिये हईं... त का भइल ?'

– हम ई कहल चाहत रहुईं कि...

– कहीं...ऽ...

– तूँ बहुते सुन्नर बाड़ू !

– अच्छा ! ऐसे का ?

हम कुछ आगे कहितीं तले केमेस्ट्री वाला प्रोफेसर साहेब ओनिये आवत लउकुवन । 'अब ई का करे एने अइले हा ?' हमनी के दूनों आदमी उनका के एके साथ देखुईं जा । हमार मन पितपिता के रह गइल ।

– अच्छा...!' ऊ आँख गड़ोरले कहली – 'एह दुनिया में बहुत चीज सुंदर बा । का करब ? कालेज में पढ़े आइल बानीं, पढ़ीं । आज थैंक्यू बा । आगे से हमार राह रोके आ हमार तारीफ करे के कोशिश मत करबि । बुझलीं ?

हमार बोलती बन आ ऊ फुरगुद्दी अस चहकत एने - ओने– कंपाउंड के बहरी जा !
निश्छल मन के सुतंत्र अरमानन के का कबो अँकवारी में बान्हल जा सकल बा ?

प्रो0 पी चंद्र जब एकदम नगीचा आ गइले त हमरा होश भइल । हम अभिवादन कइलीं । ऊ आशीर्वाद दिहले । हम अपने जगहा खाड़ रहीं आ ऊ सीढ़ी चढ़े लगले । अबे कुछे सीढ़ी चढ़ल रहले कि रुक गइले आ पीछे घूम के पुछले, 'पुस्तक मेला घूमे ना गइलऽ हा का, अभि ?'

– ना, सर ।

– का विचार बा ?

– मन डेराता, गुरुदेव !

– काहें ?-- प्रोफेसर साहेब हँस दिहले ।

– पटना में डेंगू वाला मच्छर... !

– ओ !'-- प्रोफेसर साहेब मुस्कुरइले ।

हमरा ओह मुस्कुराहट के भाव ना जनाइल, जइसे ओठ - कपाट खोले में दुख बरत होखे, 'एहिजो डेंगू वाला कम नइखन स जी ।' हम चुपे रहीं । लइका - लइकी सीढ़ी से आवत - जात रहे लोग । 'सब ठीक बा, बाकिर डर ठीक नइखे ।'-- कहत प्रोफेसर साहेब आगे बढ़ गइले ।

हमार मन दोचित होखल आवत रहे । बुझाते ना रहे कि का करीं आ केने जाईं ! कालिंदी हमरा के नीक से जानऽतारी आ अइसन बतकही ?

कालेज के उतरवारा गेट से सीधे लगभग 200 मीटर आगे बढ़त गइला पर एगो ढलान अस मिलेला । ओहिजे दहिने ओर, जहाँ से एगो राह शहर का ओर जाले, एगो चरवान रख के शिवलिंग अस बना दिहल गइल बा । बगल में कुछ अनचलुआ पइसा, ऊपर सेनुर के टीका, सेकरा ऊपर कुछ जंगली फूल आ गूर में सउनाइल अछत । कबो - कबो ओह पर कांड करे वाला खजुअहवा कुक्कुरो लउक जाला ।

फस्ट इयर के एगो लीजर घंटी में एक दिन घूमत - घामत ओनिये चल गइल रहीं त बेंजू मिलल रहे । कथई रंग के जींस आ गरदन में सरकवाँसी लगवले पतरका मफलर । ऊ पढ़ेवाला लइका रहे ना, कुछ रंगदारो रहे आ परिवार से धनियों बुझाइ । बाद में, जब कालेज में पुरान - चिरान हो गइल आदमी त जानल कि ऊ सेकेंड इयर के स्टूडेंट ह । लइकिन से पीछे वाला बेंच पर बइठ जाइ आ उहन लोग के उदबास लगावे । टीचरो लोग ओकरा से उबिया गइल रहे तबो डरने कुछ कहे के हियाव ना रहे । एक दिन अँगरेजी वाला सर कुछ समुझावल चहले त तर्जनी देखावत कहलस – चुपचाप पढ़ावऽ आ रस्ता नापऽ । ढेर स्मार्ट बनबऽ त कपारो रँगत देर ना लागी ।'

फेर केकर मूँड़ी दूगो रहे जे आगे कुछ बोले !

गंगा जइसे पयकड़ लागल गोड़े गँवे - गँवे चलत रहली । फरवरी के ठंड में उनका हँफनी छूट - छूट जात रहे । मरघट के राख, शहर के अइलत आ दूर देश से छाती पर बइठल फैक्टिरियन के मवाद से ऊ बेमरिता हो गइल रही तबो उनका चलत जाये के रहे । ई नियति रहे कि समुंदर से कइल गइल उनुकर करार निभावे के बात – कहल नइखे जा सकत । कालेज घाट पर फजिरे - साँझ लोग नहात होई । दूपहर में त कमे आवक - जावक रहत रहे । दू गो नन्हीं - नन्हीं लइका, जवन अपना माई आ बड़ बहिन सँगे आइल रहऽ स, करिया - करिया ओठ कइले काँपत रहले स । माई आ बहिनियो उहनी के बेर - बेर बरजऽ स कि ऊ पानी में छपाका नत मारऽ स बाकिर बबुअवा नटरपन नाध दऽ स । थोरिके देर बाद माई दूगो तसला में गोतल कपड़ा सीढ़ी पर पटक के फींचे लागल रहे आ बहिनया दाँत किटकिटावत भाइयन के सूखल कपड़ा पेन्हावे लागल रहे ।

हम ओहिजा से हट गइलीं । माई के ध्यान आइल । आज ओकर तबीयत ढेरे खराब बुझात रहुए । पिताजी से पुछले

रहुईं कि कालेजे जाईं कि ना ? ऊ कुछ बोलले ना । मूड़ी गड़ले - गड़ले थाहि - थाहि के कहले रहले – जा बाकिर हाल्दिये आ जइहऽ । कुछ कहल नइखे जा सकत कि कब उलटन हो जाई !'-- पिताजी जब ढेर दरद में बात करेले त अइसहीं करेले – एकदम नऽइ के जेसे उनका ओठ के काँपल आ आँख के सरवल केहू दोसर मत देखे । हमहूँ आँख बचवले - बचवले इहे कहलीं – बस गइलीं आ अइलीं ।' का कहितीं कि एगो लइकी से बतियावे जात बानीं ?

पिताजी के बात सुन के अपना करनी प घिन बरल रहे । लागल जइसे दरे प थहराइ के बइठ जाइबि । आँखिन के आगे लुत्ती उड़े लागल रही स आ हमरा रोआइ बर गइल । मरुअइले कालेज का ओर भागल रहीं । 'कहीं माई के कुछ हो जाई त का होई ?'-- अपना बदमाशी प बेर - बेर खीस बरे । बेर - बेर माई के सब बतिया मन परे । तबो कालेजे चलिये गइलीं । कई दिन से ओने झाँकियो पारे ना गइल रहीं । सोचलीं कुछ मन बदल जाई ।

माई के बोल - चाल एक हप्ता से बन रहे । खाइल - पीयल पनरहियन से । पत दू दिन प देंह छेदाइ आ ग्लूकोज चढ़ावल जाई ।

ओकरा बेड सोर हो गइल रहे ।

तिसरका दिने अमरित रस आकाश सोख लेलस । हम भकुअइला अस कबो आँख मलत पिताजी के देखीं त कबो भुइँया सुतावल माई के । गया बो चाची जब ओकर गोड़ रंग के ठाड़ भइली त हम देखलीं – माई के गोड़ के रंग जतना टहकार रहे ओतने पिताजी के ढेंढर के रंग– एकदम टेस लाल ।

000

माई के किरिया बितला के बाद जब कालेज गइलीं त बहुत कुछ, जवन पहिले बहुते नीक लागत रहे, बहुते जबून लागे लागल रहे । गंगा के कछार पर लहर अबहियों ओही तरह ढाही मारत रहऽ स । ओही तरह आदित के जोत, दहत जात अधजरल, बे - परद लाश के छोपत, मुँह लुकवावत टकसत जात रहे । ओही तरह प्लास्टिक के चिमुकी के बीच से उजबुजाइल मछरी सुबहित साँस लेबे खातिर कबो हवा में, कबो पानी में भटकल चलऽ स ।

माई मन परे त हम्हूँ उबिया जाईं आ चुपचाप क्लास छोड़ के घाट देने चल दीं । घाट के सीढ़ियन प अकेले बइठे के मन करे ।

ओह दिन घाट ढेर शांत रहे । कम्मो रानी गंवे - गँवे आवत लउकुई । पहिले त हम कुछ जनबे ना करुईं । ऊ त सुरुज भगवान कपार के पीछे रहले एह से उनकर परछाहीं एकदम हमरा आगे पानी में बनल त हम चिहुँक गइलीं आ अकबकाइले पाछा तिकवलीं त उनुकर दर्शन भइल । हमरा लागल ऊ उदास बाड़ी । बाकिर अकेले ?

– हम रोज तोहरा के देखत बानीं । कबो - कबो क्लास के बीचहूँ क्लास से निकल जा तारऽ । ओने हप्तन गायबे रहलऽ हा ।'-- ऊ कहली । उनकर आँख झुकल रहे आ ऊ दहिना हाथ के मामा अँगुरी ओठ के नीचे रख के कुछ सोचे

अस ककुलावत रहली । हम कुछ बोललीं ना, खाली आंँख उठा के उनका ओर देखलीं । ऊ फेर कहली – हमार मम्मी तोहरा मम्मी संगे पढ़लि ह । दूनों जानी एके संगे मैट्रिक पास कइल लोग । फेर हमरा मम्मी के बियाह हो गइल । तोहार मम्मी बीए तक पढ़ली आ...'ऊ कुछ आउरियो कहिती बाकिर अपना देने आवत लइकियन के जरोह देख के चुपा गइल रही । हम उहनी में से कुछ लइकिन के जानत रहीं, कुछ के ना जानत रहीं । उहनी में से एगो आवते उनका के झपिला के कहलस – एहिजा तिरवाहीं बइठल तीर चलावत बाड़ू आ हमनी के सउँसे चरित्तरबन चउगठत गोड़ मुरुका लिहलीं जा ! एकर डाँड़ के दी, बोल ?'

ऊ लइकी कालिंदी से अइसे बोलत रहे जइसे हम ओहिजा रहबे ना कइलीं । फेर सब मिल के उनका के चांँटो - माटो ध लिहली स कि ऊ उजबुजा गइली आ ओह लइकी के जोर से चिउँटी काटत गँव से कहली – ना चुप रहबू ? देखत नइखू कि के बा ! तबे से अलला रहल बाड़ू !'

ना त ओह लइकी प नाहीं कवनों अउर पर एह बात के असर परल । असरे का परे के रहे जब सब सोझहीं होत रहे ! एगो लइकी हमरा ओर देख के फेर उनका ओर देख के आ फेर अँखिये से सिवानी बान्हत उनका से पुछलस – हँ जी, प्रेम दिवानी जी, अब बताईं – मिलिला कुछ आगे बढ़ल ? अबे कवन चैप्टर खुलल रहुए ?'

फेर सब कोलगेट के प्रचार करत हँस परली स । हम सकदम में परल रहीं । एक मन करे कि गँव से टसक जाईं । दोसर मन करे कि चुपचाप बइठल रहीं । इहनिये लोग टसके त टसकीं । हमरा जान में जान तब आइल जब कम्मो, सबके संगे जाये के तइयारी में, हमरा सामने एगो संगी अस आके खाड़ हो गइली । तनिकी झुक के तनिक हड़बड़िये में कहली – मम्मी सब कहत रहुई कि कइसे बियाह भइल रउआ मम्मी के... फेर तबीयत खराब भइल... फेर पढ़ाई छुटल आ छुटल त छुटले रह गइल आ अब त... संसारे छुट गइल ।' उनका मुँह प उदासी छाँह अस पसर गइल रहे । हम अबे आहे - जाह में परल रहीं तले ऊ जात - जात फेर मुड़ के कहत गइली – हम जात बानीं बाकिर मन तोहरे किहाँ रह जात बा । मम्मी तोहरा के बोलवले बिया । कहियो ले चलब ।'

कम्मो के मम्मी हमरा माई से सुंदर त ना रहली बाकिर चतुर लगली । हमार माई बहुत कुछ सबसे ना कहे । कुछ त केहू से ना कहत रहे । कम्मो के मम्मी त जइसे सबसे सब कुछ कहे खातिर तइयार रहला अस जनासु । हम उनका किहाँ रामनवमी के छुट्टी में गइल रहीं । मंदिर पर के माइक नया - नया खोजल गइल शब्दन के लटगेना से भगत लोगन के मन खुश करे में जीवे - जँगरे लागल रहे । पुजारी जी झूम - झूम के भजन - कीर्तन करत रहले । उनकर हथजोरी भगवान से ना, भगवान के बनावे के दावा करेवाली सत्ता से रहे, जेकरा हाथ में लोक आ तंत्र दूनों रहेला बाकिर ऊ सबके लोक ना माने । तंत्र ओकर दास होला । ओकरा पाले अइसन ताकत रहेला कि ऊ इतिहास के अपना मुट्ठी में बान्ह के ओकर खलरा ओदार कर सके । ऊ बड़ा ध्यानी होला बाकिर ओकर ध्यान देश खातिर जीये - मरे वाला जमात पर ना, अपना के सिंहासन पर बइठावे वाला मत के बिसात पर होला ।

– खुश रहऽ, बबुआ ।'-- हमरा गोड़ लगला के जबाब में कम्मो के मम्मी कहले रही । हम तनी बेसिए सावधान

रहीं । माई के कहलका हमरा नीक से याद रहे – 'जब कवनो मेहरारू, अपना लइका के बरोबर उमिर वाला आदमी से, आछो - आछो करे लागे त ओहिजा एक छन ना ठहरे के चाहीं ।' एही बीचे कम्मो के पापा आ गइल रहले आ आवते गोड़ - हाथ धोके जे घर में लुकइले त हमरा उहाँ से लवटे तक बहरिअइले ना । एने हम हालदेने लवटे के फेरा में रहीं आ ओने कम्मो के मम्मी हमार क्लास लेबे लागल रही ।

उनकर पहिला सवाल रहे – 'आवत काहें ना रहनीं हँ, ए बबुआ जी, जब जानते रहनीं हाँ कि हम राउर मउसी लागब ?'

हम चुप रहलीं । एह प्रश्न के जबाब देबे के कवनो मतलब ना रहे । मउसी होखला भर से कहीं आइल - गइल संभव हो जाला का ? आ उहो कइसन मउसी ? हमार माई के गाँव आ उनकर गाँव एके जगहा ह । त का भइल ?

हमरा कम्मो से मतलब रहे । उहो एह से कि ऊ हमरा नीक लागसु । सुघर मुँह पर निश्छल भोलापन जइसे गेना के फूल प चाननी उगल होखे । बाकिर, हमरा अब अनकसावन बरत रहे । हमरा जनउए जइसे ओह घर के सब लोग अइसन लीला करत होखे जेमे खऽलो आदमी भल के सोभाव ओढ़ लेला । हम घरे आवे खातिर कसमसात रहलीं ।

एही बीचे चाह आइल । कम्मो ले आइल रही । जब चाह के कप उनका हाथ से हमरा हाथ में आइल त लागल उनकरा मन के एगो बँवर हमरा मन के बान्ह लेले होखे । हमार मन एगो सँकलप लेत - लेत रुक गइल – ई हाथ हम्हीं थाम्हब । तले ओठघाँवल केवाड़ी ठेलत सनाक् से एगो आदमी एकदम हमरा सामने आके खाड़ हो गइल । दनाक् से कम्मो के मम्मी से पुछलस – अइले हा ?

कम्मो के मम्मी पहिले हमरा देने फेर ओह आदमी का ओर देखत कहली – अबे ना।

– एकदम आइल होइहें । हम उनका के घरे आवत देखुईं ।
– नइखीं आइल जी । केनियो बजार में रुक गइल होइब । हम झूठ बोलबि ?
– रउआ कुछुओ कर सकत बानीं ।'-- ओह आदमी के मुँह पर व्यंग के एगो पातर मुसुकी सट के, फेर उखड़ के, हवा में उधिया गइल – 'मऽडरो ! हम जानत नइखीं का ?'

कम्मो के गरदन झुक गइल रहे । हमरा दुख बरल । हमरा ई ना बुझात रहे कि ई आदमी एह तरे काहें बोलत बा ? आ ई खोजत केकरा के बा ? आ कम्मो के मम्मी ई काहें कहली हा कि ऊ अबे बजरिये में होइहें ?

– हम आज बिना भेंट कइले टकसब ना । तीन चिचिरी खींच के कहत बानीं ।' – ऊ आदमी कानी अँगुरी से डाँड़ पारत अस कहलस ।

तले कम्मो के मम्मी अपना के संभार चुकल रही – 'तऽ ठीक बा बहरी पलानी में बइठीं आ दुआर अगोरीं ।'
– ऊ त हमरो बुझाता कि दुआर अगोरीं कि आँगन ! ओही घरी ना बुझाइल रहे जब रउआ के समान दिहुईं ।

– त का हो गइल ? समान के बदले जान ना नूँ लेब ?

– जान ना पइसा लेब ।

– ठीक बा । जब होई तब दिआई । करज नइखे नूँ खइले आदमी ? उधार - पाइँच के ना लेला - देला जी !

– ठीके बा ! दू महीना के करारे दू साल हो गइल नूँ उधार - पाइँच !

हम गँव से कम्मो के मम्मी के गोड़ छुअलीं आ घर खातिर सरपटिया नाध देलीं । गुलाबी जाड़ लागत रहे । पिताजी टोपी पहिन के कतहूँ जाये के कहत रहले । एहिजा बिना टोपिये पहिनले कपार में आग फूँक देले रहे । माई के मुअला के बाद हमरा बुझात रहे पितोजी देंहिये ढोवत बाड़े ।

कमेस्ट्री वालू सर के दूगो लइकी बाड़ी स । सर के ट्यूशन खूब चलत रहे । बिहिया तक के लइका फस्ट पसिंजर पकड़ऽस आ एक घंटा पढ़ के कवनो गाड़ी से लवट जा स । डाउन में त सुपरोफास्ट पसिंजर बन जाली । ओहू में बात पढ़े वाला लइकन के रहे ! बिहार में पढ़े वाला लइका त अँखफोर होते नेता हो जाले स ।

सर के लइकी बड़ा तेज रहली स – खाली पढ़हीं में ना, हर तरह के दाँव - पेंच आ अंदाज में । छोटकी बड़की से चार चावाँ आगहीं रहत रहे । सर अपना लइकियन के लेके निश्चिंत रहीं । अंगरेजी वालू प्रोफेसर साहेब एक दिन क्लासे में बकबकाये लगले – 'जो लोग अपनी बच्चियों की गतिविधियों से अनजान रहते हुए दिन - रात बस दाम कमाने के चक्कर में लगे रहते हैं उनका बंटाधार होना तय है ।' एक दिन अचके कमेस्ट्री वालू सर के तबीयत गड़बड़ा गइल । ऊ पटना के एगो प्राइवेट नर्सिंग होम में भर्ती हो गइले । ओने डाक्टर लोग प्रोफेसर साहेब के इलाज करत रहे एने उनकर बड़की बबुनी अपना ड्राइबरे संगे फुर्र... ! अँगरेजी वालू सर कहले – 'देखो, कहता था न !'

यूनिवर्सिटी तक हल्ला हो गइल । सऽइ आदमी सऽइ बात । प्रोफेसर साहेब के दाम कामे ना आइल । बुचिया के काम, दाम पर भारी पर गइल । एक रात सुतले त फेर फजिरे सूरुज भगवान के गुलाब देखे खातिर नीन ना टूटल । अँगरेजी वालू सर कहले – डेंगू के मच्छर से डेंगू वाला आदमी खतरनाक होला ।'

– कइसे ?-- केहू पूछल ।

– ऊ छल में जामेला, नमकहरामी में पोसाला आ संवेदनहीनता के टूँड़ से ओकरे खून चूस के मुआ घालेला जे ओकरा के रोटी खियवले रहेला ।

– तब ?

– तब का ? एक जानी बाँचल बाड़ी । उहो केहू संगे उड़ जइहें ।

हमरा मन में रह - रह के एगो बात सोचा जाय – भागेला डरपोक । दम नइखे त प्रेम में परहीं के का बा ? मये घर के अधसँसू कऽ दऽ आ समाज के मुँह में सात गो जीभ उगा द । ई ठीक नइखे ।... आ कहीं जो गलत आदमी गलत नीयत से गलत कऽ दिहल त ? इज्जत त गइबे कइल सतरह टुकी के पावोरोटी बने में देरी ना लागी ।

पिताजी से कम्मो के घर के हाल सुनवलीं त ऊ मुसकाये लगले । कहले – 'कम्मो के पापा तनी कम सुनेले ।'
हमरा अचरज भइल– एँ !
– हँ ।
– आ ऊ दोकानदार ?
– पागल ह ।
– पागल ???
– हँ । ओकरा मेहरारू के अपहरन क लियाइल रहे । नेताजी के आदमी लोग फिरौती माँगल । ऊ बेचारा पइसा लेके ओजग गइल जहाँ मँगले रहले स । मेहरारू त ना, ओकर रउँदल देंह मिलल । पइसा लेके बगेद दिहलें स पापी । नेताजी ओही पाटी के रहले जवना पाटी के ऊ वोट देले रहे । गरीब आदमी पुलिस से लेके कोर्ट - कचहरी– जहाँ ले पाराकाबू रहे, दउरल । कुछ ना होखल । लोग बोली बोले अलगा से । गँवे - गँवे ओकर हालत खराब होखे लागल ।... पहिले त ओकरा बेवकुफई से लोग खिसिआइ भा हरान होखे । अब दया देखावेला ।
– बाकिर हमरा त एकदम इहे लागत रहे कि कम्मो के पापा उधार लेके अब टरकाबाजी क रहल बाड़े ।
– एकदम ना ।
– कमाल बा !

दुसरा दिने कालेज बंद रहे । साँझ के फेर मन कइलस कि कम्मो देने जाईं । पिताजी मना त ना कइले बाकिर मन तनी दोसरा अस कइले लगले । हम पुछलीं – ना जाईं का ?'
– काहें ! हम मना नइखीं करत ।
– तबो राउर मन बेदिल लागत बा ।
– अइसन कुछ नइखे । कालिंदी के मम्मी के नाँव से तनी... ।
– मतलब ?
– कुछ ना । तोहार मन करत होखे त जा । जब एही दुनिया में जिये के बा त कबले डेराई भा लजाई आदमी ।'– पिताजी ढेरे गंभीर हो गइल रहले । जइसे देवाल प जोड़िआइल बिच्छी लउक गइल होखऽ स, तनिकी चिहुँकले फेर अहथिर होत कहले – 'सबितरा के बियाह पहिले हमरे से होत रहे । बाद में तोहरा बाबा के मालूम भइल कि उनुकर जनम ओही खानदान में भइल बा जे अँगरेजन के पोंछ सुहुरा के मोंछ अइँठत रहे ।
– माने सुमित्रा आंटी के बाबा भा उनका परिवार के केहू अउर अँगरेज बहादुर के नोकर रहे ?
– ना, ना, नोकर से का मतलब ? चमचा रहे लोग जे अँगरेजन संगे मिल के भारत के लोगन प जुलुम करसु ।
– माने जातिद्रोही कि धर्मद्रोही कि देशद्रोही ?
– पता ना ! ई तूँ सोचऽ । बाबूजी कहलन कि ओहिजा बिआह तीन काले ना होई ।
– त रउआ का कहनीं ?
– हम का कहलीं ? हमनी के कहाँ कुछ कहे - सुने के रहत रहे ओ घरी ! जवन गार्जियन कहले, उहे वेदवाक्य ।
– यदि रउआ कहे के रहित त का कहितीं ?
– हम बिआह करे के कहितीं । एक पीढ़ी से दोसरका पीढ़ी के गुन, सोभाव आ कर्म में जरूरी नइखे कि मेल होखे । का सोचत होइहन सुमितरा ?

हमरा नाक में गंगाघाट के भभका आइल । मन ओकाये - ओकाये अस हो गइल । पुछलीं से– रउआ का बुझाता का सोचत होइहें ऊ ?'

– इहे कि तोहरा माई के जिअता में त ई लस - तागा ना लागल । उनका मुअते कइसे सेंहुड़ कदंब हो गइल !

ओकरा बाद हम कम्मो के मम्मी किहाँ कबो ना गइलीं । बेर - बेर बोलावसु लोग । हम बेर - बेर महटिया जाईं । माई मन पर जाइ । बाबा मन पर जासु – बड़े - बड़े मोंछ, लिलार पर चन्नन टीका, मुँह में पान आ बतीसो दाँत साबूत । बोलसु त जनाई ब्रह्मा जी बोलत होखसु ।

सेकरा बाद हम कम्मो से कालेजो में ना बोललीं ।

विंध्याचल सिंह

बुढ़ऊ- बलिया

विंध्याचल सिंह

माई जइसन बढ़ भउजाई

जब हमनी के बाबूजी अचकले में मरि गइलें आ हमनी चारु भाई अभी छोट - छोट रहनी जा त गाँव के लोग - बाग बतियावे लागल कि मास्टारवा के लइका टुअर हो गइलन सन | अब ऊ बिला जइहन सन | ई सुनि के एगो अजीब ढंग के डर से मन सिहरि उठे |हम अभी छोट त जरूर रहनी बाकिर एतना जरूर बुझात रहे कि बिला गइल कवनो बहुत बड़हन दुख के नांव होत होई |"

सुरेन्दर एतना बाति एकही सांसि में कहि गइलें त हमहूँ उनुकर बाति सुने बदे ओइजे आराम से बइठि गइनीं काहें कि एकरा पहिले हम ही उनसे बातिये बाति में एगो हलुका मजाक करि देले रहनीं कि का बाति बा तहरा बड़की भउजाई से बड़ा बनेला | सुरेन्दर हमके ताकत फेरु कहे लगलें -

"हमनी के बाबूजी परेमरी स्कूल में मास्टर रहनी | का जाने कवना बेमारी से ऊ एक दिन अचकले में मरि गइलें |सांच बाति त ई हो बा कि हमनी के अबही ई सब बूझे जोग उमिरियो ना रहे | ओह घरी मरला प आसरित के सरकारी नोकरी मिले के नियम ना रहे आ हमनी के कवनो दूसर सहारा ना रहे त हमनी पर दुख के पहाड़ पड़ि गइल |

टोला - मुहल्ला के लोग मोह - छोह त देखावे बाकिर कवनो मदद करे खातिर ना आवे | घर में महतारी कबो - कबो रोवत लउकि जासु त हमनी के देखि के जल्दी से लोर पोंछिके दुलार करे लागसु आ हमनी के खायका पानी में लागि जासु |

सवाल रहे कि घर के खरचा कइसे चली ? हमार बड़का भइया बारह - तेरह सालि के रहलें आ हमनी का तीनि भाई उनुका से छोट रहनी जा | भइया कहलें कि हमनी का बाबूजी के खेती करत देखले रहनीं जा, ओइसहीं मिलि - जुलि खेती करीं जा | हमनी का तीनू भाई खुशी से कहनी जा कि ईहे ठीक रही |

खेती शुरु हो गइल | चारु भाई खेत में जवने काम में एके संगे भिड़िया जाईं जा त ओहके पूरा होखे में देरी ना लागे | अजबे किसिम के ललक आ जनून रहे | पहिले सालि कुछु अनाज भइल आ हमनी के गाड़ी अब डगरे लागल रहे |

तीनिये - चारि सालि एहतरे चलल कि एगो नया काम हो गइल | हमनी के मामा बड़का भइया के बियाह नाधि दिहलें | माई के समुझा - बुझा के दिनों धरवा दिहलें आ बियाहो होइ गइल |

बियाह त ठीके होइ गइल लगले एगो समसिया सुनाये लागल | लोग काना - फूंसी करे लागल कि आरे देखिह लो, ई लइकिया ए घर में ना रही | बाति ई रहे कि भउजाई दरोगा के बेटी रहली | बड़ घर से आइल रहली | दरोगा जी कवनो दुरघटना में ना रहलें त उनकरो मजबूरी रहे ना त उनुकर बियाह शाइद हमरा घर में ना भइल रहित | ई बतिया त हमनो का जानीं जा बाकिर केहू के बतियावत सुनला प सहम जाइंजा |

घर में भउजाई माटी के चूल्हा पर लकड़ी - गोइंठा से खाएक बनावसु | बरतन धोवसु | कूंचा से घर - आंगन बहारसु | माई के खाएक परोससु | हमनी के खाएक देसु | हमनी के कपड़ो फींचि देसु | माई के कपारे तेल भी लगावसु | सभका से नीक से बोलबो करसु | आपन घर के नुकसान जियान बूझसु | हमनी के घर के आपन घर बूझसु | एइसना पर कइसे केहू उनुका के बाउर कहो |

समय बदले लागल | सरकार के कुछु नियम बदलल आ भइया के आसरित के आधार पर मास्टर के नोकरी मिलि गइल | हमनी के खुश होखे के बढ़िया मोका मिलल बाकिर ओही में फेरु केहू कहि देउ जे अब भउजाई अलगा होइ जइहें, मरद के नोकरी पर ढेर मेहरारु अलगा होइ जाली सन | ऊ हो कहिया ले चलइहन | ई सभ सुनि के जीव कुछु सहमि त जइबे करे |

भइया के तनखाह के पइसा हम तीनू भाई के पढ़ाई - लिखाई आ घरखरचा में पंजीरी लेखा छिटा जाउ | कबो- कबो त उधारो - पांइच लेबे के पड़ि जाउ | एतना पर भी भउजाई कहसु जे देवर जी लोग के पढ़ाई में कवनो कमी ढिलाई ना होखे के चाहीं |

कुछुवे दिन बाद हमरो बियाह होइ गइल | भइया -भउजाई आपन जिम्मेदारी बढ़िया निभावल | ओकरी बाद हमरो आ एगो अउरी भाई के सरकारी नोकरी लागि गइल त हमनी का खूबे मजबूत हो गइनी जा |

अबले एगो बाति बुझा गइल रहे कि केहू के बाति से डेरइला के काम नइखे | आपना काम में लागल रहल ठीक बा | अब त हमनी का मिलिके गाँव में कई बिगहा खेत भी कीनि लिहनी जा | दुई गो टेकटर किना गइल | गाड़ी किना गइल | अब हमनी सब गाँव के बरियार परिवार गिनाईं जा | घर - दुआर, रुपया - पइसा, खेत - बारी, सवांगी सबकुछ रहे हमनी के पास |

एह बीच हमनी के एकही बाति खटके कि एगो मझिला भाई केतनो कोशिश कइके हारि गइनीं जा बाकिर पढ़लन ना | कवनो उपाइये ना लागे उनका पर | बियाह त उनुको भइल बाकिर हमनी के उनुका के लेके चिन्ता ना कम भइल |

एहू के हल - भल भउजाइये निकालि दिहली | ऊ सभका सोझा कहली कि जेतना खेत बा ऊ सब ऊहे

खेती करिहें | ऊहे अनाज बेचिहें आ पइसा अपना लगे धरिहें | तीनों नोकरिहा लोग उनुका बेटा - बेटी के ओइसहीं मिलि के पढ़ाई जइसे अपना लइकन के पढ़ाई | उनुका बेटा - बेटी के बियाह में सभ मिलिके खरचा देई आ सबके बरोबर वाली शादी कइल जाई |मम्मी जी के जियता समय ले केहू खेती - बारी बांटे के बाति ना करी | घर - परिवार के बान्हि के राखे वाली एतना बढ़िया बाति के ना मानी ? भउजाई के बाति हम सब भाई खुशी - खुशी मानि लिहनी जा आ ओहितरे हमनी के परिवार आजुवो चलि रहल बा |

आजु हमनी के चारु भाई के लइका - फइका मिलिके बहुते बड़हन परिवार होइ गइल बा आ सभे खुशी से रहि रहल बा | हमनी के कवनो काम कबो रुकेला ना | हमनी के चारु भाई आपस में पूछत रहेनी जा कि कुछु जरूरत होइ त बतइह | ई सभ हमनी का भउजाइये से सीखले बानी जा |

हमार आपन माई अबहियो बाड़ी | ऊ सइ नियरवले बाड़ी | सब मिलिके उनुकर सेवा करेला | उनुकर हमनी पर आशीर्वाद बा बाकिर बड़की भउजाई जो हमनी के घरे ना आइल रहिती त हमके बुझाला कि हमनी का अबले कहीं छिटा गइल रहितीं जा |"

अन्तिम बाति कहत में सुरेन्दर के आंखि लोरा गइल रहली सन | हमहुँ उनुका बातिन में खोइ गइल रहनी | हम हाथ के हथेली तनी ऊपर उठाके उनुके चुप करावे चहलीं | सुरेन्दर चुप त होइ गइलें लेकिन भरभराइल आवाज में हमरी ओर ताकि के पूछि लिहलें-

"आपे बताईं एइसन भउजाई के का कहल जाई ?"

हमरा मुह से झट से निकलि गइल -

"माई जइसन बड़ भउजाई"

अनिरुद्ध कुमार सिंह

धनबाद- झारखण्ड

सचल दूरभाष- 9931562396

अनिरुद्ध कुमार सिंह

हुकुम बजाना

जिनगी लागे सफ़र सुहाना ।
मालिक के सुंदर नजराना ।।
हँसते आना रोते जाना ।
दुनिया जानें चलन पुराना ।।

भटके सब धरती पर आके ।
लागेला सबकुछ अंजाना ।।
जोड़ें छोड़ें रिश्ता नाता ।
हर पल लागेला मस्ताना ।।

देशाटन सबके मन भाये ।
मानव बन जाला दीवाना ।।
पाप पुन्य के चादर ओढ़ें ।
धन दौलत के ताना बाना ।।

रातो दिन नित सैर सपाटा ।
हर मौसम में बा इतराना ।।
मानव मन चंचलता घेरे ।
मन मोहेला रुप सुहाना ।।

गमन लगे सबसे दुखदाई ।
अंत समय सबके बा जाना ।।
गठरी में ठठरी के बांधें ।
हो जाला सब छोड रवाना ।।

काया माया में लिपटाइल ।
मन मरजी इहँवा बा माना ।
दुनिया के अजबे संरचना ।
काम इहाँ बस हुकुम बजाना ।

कनक किशोर

रांची, झारखण्ड
सचल दूरभाष - 9102246536

कनक किशोर

आदिमी

काठ बनि गइल बा आदिमी
गाँठ बनि गइल बा आदिमी ।

सोरह साठ के अंतर मिटल
साढ़ बनि गइल बा आदिमी ।

जबर अबर केहू ना रहल
गब्बर बनि गइल बा आदिमी ।

घर करजा में डूब गइल बा
लाट बनि गइल बा आदिमी ।

जोड़ल अब त जाने ना ऊ
काट बनि गइल बा आदिमी ।

गुणा - भाग के पढ़े पहाड़ा
चाट बनि गइल बा आदिमी ।

लोक लाज सब पी बइठल बा
राड़ बनि गइल बा आदिमी ।

खुद के सिरिजल बोझा तले
जुआठ बनि गइल बा आदिमी ।

राम बहादुर राय

भरौली- बलिया
सचल दूरभाष- 9102331513

राम बहादुर राय

भोजपुरी के बराबरी भाषा दूसर करी न

भोजपुरी के बराबरी भाषा दूसर करी ना
भोजपुरिया बेकार बा भोजपुरी के बिना ।

पढ़ लिख के भोजपुरी भले केहू बोली ना
कहीं केहू अड़ी ना भोजपुरिया के बिना ।

हिन्दी में भोजपुरी बोले से काम चली ना
बढ़ी ना भोजपुरिया आगे भोजपुरी के बिना ।

पहिले वाला कवनो चिझो कहीं मिली ना
नया चिझुइया अड़ी ना पुरनका के बिना ।

फल फूल अंचार चटनी से काम चली ना
चली ना काम रोटी, भात, दाल के बिना ।

चाऊ माऊ खईला बिना जिनगी चली ना
थउस जाई देंह मोट अनाज खईला बिना ।

टिबुल, चंपाकल के पानी से काम चली ना
फसल पूरा दाना धरी ना बरखा के बिना ।

नकल कईला से ढ़ेर दिन काम चली ना
नोकरियो नीमन मिली ना पढ़ाई के बिना ।

लबजई, लुतुरई, चमचई ढ़ेर दिन चली ना
भेद कबो खुलिये जाई कुछ बतवले बिना ।

ए बबुआ लिखले से काम खाली चली ना
खेदा जइबऽ घर से कहियो कमइले बिना ।

बबुआ राम बहादुर काम तोहरो चली ना
कटि ना जिनगी तोहार भोजपुरी के बिना ।

शिवम तिवारी

रिसड़ा- कोलकत्ता

शिवम तिवारी

भोजपुरी के मान्यता

जे घर में बोले दूसर भाषा,
उ अलख जगावे भोजपुरी के ।
लिखे - पढ़े में लाज लागे,
मांग करे भोजपुरी के ।
बुझाते नइखे अइसे कईसे,
मान्यता मिली भोजपुरी के ।

सुनीं ए आपन भोजपुरिया भाई,
शिवम् कहे ले माथ नवाई ।
पहिले आपन भोजपुरिया के,
सुख - दुख में जा के साथ निभाईं ।
आवे जो कवनो बीपत त,
ओकरा साथे खड़ा हो जाईं ।
मिलीं - जुलीं एक दूसरा से,
आपस में व्यवहार बनाईं ।
घर में रहीं भा बाहर जाईं,
मिले जो कवनो भोजपुरिया त,
अपने भाखा में बतियाईं ।

भोजपुरिया जब एक हो जईहे,
मन के आपन भेद मिटईहे ।
तबे जाके भोजपुरी के,
दुनियां में झंडा लहराईं ।
निहोरा बाटे इहे शिवम् के,
कहस आपन माथ नवाई ।

शशिलता पाण्डेय सुभाषिनी

बलिया- उत्तर प्रदेश

शशिलता पाण्डेय सुभाषिनी

चान जइसन

हमरा मन के आंगन लागत रहे सून - सून,
जिनगी रहे हमार बड़ा उदास अईसन ।

सब कुछ रहे हमरा पास बाकी जिनगी,
रहे बेरौनक सून आसमान जइसन ।

एक दिन पतझड़ में बहार मुस्कुराइल,
चाँन जईसन सुघर फूल नीयर कोमल |

एगो कली, परी अइसन धरती पर आईल,
खिलत फूल नीयर ज़िंनगी मुस्कुराईल |

नन्हकी कली भी हँसल - खिलखिलाईल,
अईसन लागल, बहार गीत गुनगुनाइल |

हमार लड़कपन फेरु से लौट आइल,
संगे - संगे हमारा गोदी मे रहे उ खेलत |

कबो फानत - कूदत किलकारी रहे भरत,
कबो छोटी - छोटी हथेली से हमार स्पर्श कइलस |

कबो माथ के बार मुठ्ठी में धई के खिलखिलाइल,
झूठ - मुठ के हम रो देनी, देखावेनी होई के उदास |

हमार मुंह उठा के ऊपर हमार भाव परखेले,
कबो दौरेले कबो दौरावेले उ लुकाइके |

हमारा पीछा आंचर में मुँह तोपी के चिढ़ावेली,
गील माटी में खेल - खेल तनिक माटी चीखी लेली |

फेर हमरा के भी माटी खाएके आमंत्रण देली,
करली कल्लोल कोलाहल अपना भाषा मे गावेली |

हम आंनदित मन से ईश्वर के शुक्र मनावेनी,
एगो चाँन बिहंसता आसमान के ऊपर |

दोसराका चनरमा जमीन पर खिलखिलाता,
खिलल फूल नीयर बाड़ी उ खिलल बाड़ी सुन्नर |

नन्हकी किरिनिया जैसे उगते करेले जग उजियार
हसेली जैसे झंकृत होखे पाँउवा में चांदी के पायेल,

दुनियाँ के सबसे आनंद - सुखद अनुभूति ,
जब पिरितिया लुटाये एक दूजा पर दादी - पोती ।

डॉ0 एम.डी. सिंह
गाजीपुर

डॉ० एम.डी. सिंह

किछु निछुट्टा नवा साल प

नवका साल रहे निम्मन चिक्कन जिनगी बनल रहे खुशहाल ।
जिउ पउंड़त रहे गहिरे छीछिल अस दनदन टूटै सगरी जाल ।।

जवनै जिउ चाहे मनई पावै आगा मेढ़ रहे ना खाल ।
सरपट दउड़ लगावत रहे जिनगी पछुआइल रहे काल ।।

उहो पतीला तोहरे हऽ बाबू जेमें गलति आजु बा दाल ।
जिन पूछा हे मन केकर दिन, केकर महीना, केकर ह साल ।।

जरल बूतल उधिआइल बनिके धुआं - पताई पछिलका साल ।
कइल जतन जाव आवा सभे अस, बने नौका गुदरी क लाल ।।

निछुट्टा- स्वतंत्र
पतीला - बटुली, भगौना

(ई साल होखै सभकर चहकोर)

राजेन्द्र राज

चन्दन नगर, हुगली- कोलकाता

राजेन्द्र राज

पतोहिया मालिक बनल बिया

पेट काट पढ़ौली बबुआ के
माई कहत बिया
अईसन जमाना आईल पतोहिए
मालिक बनल बिया

भारत आपन रह के भी
ब्रिटिश के राज रहे
वोईसे घर में राज पतोहिया
हुकुम चलावत बिया

दिन दुनिया देखत बाटे पर
केहू ना कुछ बोले
घर घर एक ही हाल भइल बा
जरेला सब कर जिया

बेटा परल बा दुविधा में
राह न तनिक बुझाता
तोहरो अईसने नौबत आई
जवन बोअत बाडू बीया

अब से हो समझावत बानी
समझ ल ए तू कनिया
बैठ अकेले झख मरबू तू
परदेशी बन जाई पिया

एतना मत हो राज चलाव
बदल ल आपन रहनिया
ना त नईहरे दिन बीत जाई
बजई ह खूब हरमूनिया

अनिल ओझा नीरद

नंदीबगान, कोलकाता

अनिल ओझा नीरद

कुंडलियां

1)

प्रेम से भक्ति - भाव जो, ईश्वर होहिं अधीन ।
सुखी रहे जे रमल बा, कहे ई लोग प्रवीन ।।
कहे ई लोग प्रवीन, रह गतिशील हमेशा ।
सकल श्रृष्टि गतिमान, दे रहलि सतत सनेसा ।।
नीरद के कहनाम, समरपन कर नेह से ।
ईश्वर के त भूखि मिटेला, सदा प्रेम से ।।

2)

मुरुछा में बा जी रहल, अधवा मनुज समाज ।
आत्मा तक गिरवी रखल, लउकत मानव आज ।।
लउकत मानव आज, भुला कुल्हि भाईचारा ।
निज उन्नति के ठसक, बहावत उल्टा धारा ।।
नीरद के कहनाम, हर जगह लगी का मुरुचा ।
रही कारवां साथ, जो ना कस छूटी मुरुछा ।।

3)

अनुभव बस भगवान के, कइ पावे ना लोग ।
बोलि के ओन्हे बतावे के, ना बा कवनो योग ।।
ना बा कवनो योग, ना ओकर बरनन होई ।
जे संउसे ब्रह्माण्ड, शब्द में कइसे जोई ।।
नीरद के कहनाम, कहां बा लीखल संभव ।
बाहर कहंवा खोजऽ,भीतर कर तूं अनुभव ।।

4)

पालन विधि पूर्वक करे, अगर प्रकृति के लोग ।
त अभाव, दुख, कष्ट के, बने ना कबो कुयोग ।।
बने ना कबो कुयोग, इ ह अइसन व्यवस्था ।
जे लीही पहिचान, सुखी ऊ हरेक अवस्था ।।
नीरद के कहनाम, एही से ऋतु संचालन ।
मानेला हर जीव, आदिमी करे ना पालन ।।

अशोक वर्मा 'हमदर्द'

चापदानी, हुगली

अशोक वर्मा 'हमदर्द'

कहवां गइल ऊ दिन

ऊ ठंडा के दिन ना जाने कहाँ गईल,
जब धूप खुदे हमसे बतियावत रहे ।
ईया के बोरसी में आलू पाकत रहे,
धुँआ में लिपटाइल बचपन
खिलखिला के हँसत रहे ।
आ हमनी के गाति बाँधी के
घुमत रहनी जा ।

उखी के कड़ाह लगे
बांस के सुपली लेके खड़ा रहल,
आजो याद बा
जब मुटन काका
तनिका गुड़ देके
फुसला देत रहलन ।
ऊ गुड़ के मीठास में
हमार पसीना
आजो घुलल बुझाला ।

हाथ जरत रहे,
बाकी मन कबहूँ ना जरल,
काहे कि ओह दिनन में
मेहनत भी
खेल जइसन लागे ।

रहरी के खेत में
फूटल रहर बिनल

आजो याद आवेला,
एक - एक दाना
जइसे सपना सहेजत रहल ।
ओह पईसा के वज़न
आजो हथेली में महसूस होला,
कम रहे ऊ पईसा,
बाकिर सम्मान से
बहुत भारी रहे ।

अब ठंड त आ जाला,
मगर ऊ अपनापन ना आवे ।
हीटर बा, कंबल बा,
बाकिर इया के बोरसी के
ऊ आँच कहाँ ?

जब दलानी में पूअरा बिछत रहे,
पूरा टोला के लइका
लेवा - लेके
एके जगह जुटत रहले ।
जहिया लिट्टी बने,
ऊ दिन लिट्टी के
चोरउवल भी उत्सव रहे
कबो कोठिला में,
त कबो छप्पर पर,
त कबो छोडी में ।

ऊ सब आजो
मन के कोना में
जिंदा बा।

समय बहुत कुछ दे दिहलस,
बाकिर बहुत कुछ छीन भी लिहलस ।
आज सब कुछ पास बा,
बाकिर कुछ कमी लागेला ।

काहे कि ऊ ठंडा के दिन
सिरिफ मौसम ना रहे,
ऊ त जिनगी के
सबसे गरम एहसास रहे ।

बबलू अऊर शशिनाथ के साथ
जब बरसीम घास काट के
लियावत रहनी,
ना कवनो झिझक रहे,
ना कवनो दिखावा
बस एके चाह रहे
कि हमनी के सदा
एके साथ रही जा ।
आज हिंदू मुसलमान के
बात होता, बाकिर
हम अपना असलम के
कइसे भुला जाई,
जे एक दूसरा खातीर मरत रहे ।
बाकिर रोजी - रोटी के चक्कर में
सब अलग - अलग हो गइनी जा ।
विनायक चाचा के
एक - एक बात
आजो दिल में
वैसे के वैसे जिंदा बा...
बाकीर ना जाने उ समय
कब आई जब हमनी के
एक साथ बईठ के
पुरान बात के याद कर के
ठहाका लगाईम जा ।

Estd. 2023

STUDYAATRA PVT. LTD. PRESENTS

+91 8423243389

Ballia CommerceNomy

Kyuki........ Commerce se sab hota hai

ACADEMY OF COMMERCE, MANAGEMENT AND BANKING

FOUNDER & DIRECTOR
Dr. RAKESH KUMAR VERMA
Assistant Professor (Ex.), SMMT PG College, Ballia
Commerce Faculty- Heritage School, Jamua, Ballia
PhD (Accounting & Finance) (RGIPT)
NET/JRF Commerce
M.Com (Delhi School of Economics- DU)
B.Com (H) (Hansraj College- DU)
Jawahar Navodaya Vidyalaya- Ballia

YOU DESERVE THE BEST EDUCATION

COURSE FEATURES
1. Online Live Classes
2. Recorded Video Access
3. Offline Classroom Session
4. Unlimited Mock Tests
5. Medium- Hindi and English
6. Access on Web and Android App

TEST SERIES
1. Chapterwise Tests
2. Full Syllabus Test

STUDY MATERIALS
1. Class Notes (PDF)
2. Question Practice Sheet (Chapterwise- PDF)

DOUBT SESSION
-Special doubt session facility

B.COM, M.COM
11th & 12th Commerce

- CUET Commerce (UG & PG)
- UGC NET/JRF (Commerce & Management)

Enroll Now

ADMISSION KIT*

Worth ₹15,299/- Free

- Worth ₹14,000 Add-on Courses
- Worth ₹500 Membership Fees Free
- Worth ₹100 Discount Coupon
- Worth ₹90 CommerceNomy Notepad
- Worth ₹10 One Ball Pen
- Worth ₹599 CommerceNomy Brand Logo T-shirt

CommerceNomy WORLD

STUDYAATRA A KNOWLEDGE JOURNEY
Commerceenergy Freshers' Party
PADHAKU KAMP SELF STUDY HOME
CareiTY CARE-COMMUNITY-CHARITY
NEXSTART Farewell Event
KamerceKraze Ballia CommerceNomy Mahotsav
Guest Lecture Series Baat ExpertsKey
ComIIQuiz Ballia's Biggest Commerce Quiz
commercestalk Talent Search Examination

1st Time In Ballia City

Attend Live Classes through Ballia CommerceNomy Android App

GET IT ON Google Play

FREE Demo for 1 Days

Follow us

* Terms & Conditions Applied

पताः द्वारिकापुरी कालोनी (नियर चन्द्रशेखर आजाद ITI) – बलिया 277001

www.commercenomy.com +91 8423243389 helpcommercenomy@gmail.com

अंकुश्री

8, प्रेस कालोनी, सिदरौल,
नामकुम, राँची (झारखंड)-834 010
चलभाष रू 6204946844

अंकुश्री

का होई

पत्ता जस
जब तन डोले
तब
मन के गति के
का होई ?

जवना आन्ही में
उड़े अटारी
झोपड़ी के
ओह में
का होई ?

अंकुश्री

8, प्रेस कालोनी, सिदरौल,
नामकुम, राँची (झारखंड)-834 010
चलभाष रू 6204946844

अंकुश्री

जदि बुझा जाए

हर घास पर
मुक्ता गिरल बा
जदि चुना जाए
हर सांस पर
आस टिकल बा
जदि गिना जाए
हर हाट में
ठाट बिकत बा
जदि किना जाए
फूल खिल के
गिरल जात बा
जदि मुरझा जाए
हर राह से
लक्ष्य मिलत बा
जदि बुझा जाए

डॉ0 संगीता पाल

कच्छ- गुजरात

डॉ० संगीता पाल

इ सुना बतिया हमार

ठीक ना बा लोगवन के हलतिया हो इ सुना बतिया हमार,
कइसे बताईं हम बिपतिया हो इ सुना बतिया हमार ।

चारों ओर बाटे बड़ी जोर महंगाई,
कैसे उ जी जेकर कम बा कमाई ।
देख ल गरीबन के सुरतिया हो इ सुना बतिया हमार,
ठीक ना बा लोगवन क हलतिया हो इ सुना बतिया हमार ।
कइसे..

हेरे नौजवान नहीं मिलय रोजगार हो,
रात दिन क भइल सारी मेहनत बेकार हो ।
कइसे होई आगे क पढ़इया हो इ सुना बतिया हमार,
ठीक ना बा लोगवन के हलतिया हो इ सुना बतिया हमार ।
कइसे..

बड़ा अत्याचार होला बिटिया के सथवा,
वहशी दरिंदन क बढ़ल बाटे मनवा ।
लागेला करेजवा में अगिया हो इ सुना बतिया हमार,
ठीक ना बा लोगवन के हलतिया हो इ सुना बतिया हमार ।
कइसे...

जात धरम के नाम होत बा लड़ाई ,
चारों ओर से आम जनता पिसाई ।

भरमल बा सब कर मतिया हो इ सुना बतिया हमार,
ठीक ना बा लोगवन क हलतिया हो इ सुना बतिया हमार ।
कइसे..

भोग विलास में डूबल रहैं सन्यासी,
देखी के त्याग इनकर आवेली हंसी ।
उधेड़े कबीर इनकर बखिया हो इ सुना बतिया हमार,
ठीक ना बा लोगवन क हलतिया हो इ सुना बतिया हमार ।
कइसे...

कहें 'संगीता' बड़ी साफ साफ बतिया,
दिनवा के दिन कहें रतिया के रतिया ।
नाही करें केहू के चाटुकरिया हो, इ सुना बतिया हमार ।
ठीक ना बा लोगवन क हलतिया हो इ सुना बतिया हमार ।
कइसे बताईं हम बिपतिया हो इ सुना बतिया हमार..

डॉ0 जनार्दन चतुर्वेदी 'कश्यप'

भृगु आश्रम- बलिया

चलभाष- 9935108535

डॉ० जनार्दन चतुर्वेदी 'कश्यप'

हाय रे विधाता

हाय रे विधाता..
का.. अइसन दिन आ गइल
कि तोहरे एगो अछयी अंस
एह संसार मे आ के
जिनिगी मे बन्हा गइल ।
हाय रे विधाता.....।

तू तऽ एके आदमी बना के भेजले रहलऽ
एकरा खातिर मये साज सहेजले रहलऽ
तब्बो ई लोक लाज छोडि के
हमार तोहार के फंसरी मे अझुरा गइल ।
हाय रे.....।

जब ई तोहरा संग मे रहे
तब त..तू एकरा के
बहुते बात बतवले होखबऽ
एह संसार मे जीये के
ढंग भी सिखवले होखबऽ
तब्बो एहिजा के हावा लगते
तोहार कुल्हि बात भुला गइल ।
हाय रे.....।

सुनले बानी कि
तू पारस पाथर के रुप मे निरंकार हवऽ
अकटी ब्रह्म ओंकार हवऽ
तब्बो एकर सगरी दोस

तोहरे माथ मढ़ा गइल ।
हाय रे.....।

एकरा त..सोना बने के चाहीं
ई कोइला काहें बनि गइल
सुगन्ध भूर केवड़ा बने के चाहीं
ई मइला काहें बनि गइल
आखिर अइसन का हो गइल कि
तोहरे जनमावल तोहरे अलम ले ले
जिनिगी के पुलई ले चहुॅपि के
अचके मे भहरा गइल ।
हाय रे .....।

डॉ0 जनार्दन चतुर्वेदी 'कश्यप'

भृगु आश्रम- बलिया

चलभाष- 9935108535

डॉ० जनार्दन चतुर्वेदी 'कश्यप'

अब धरती के जल जनि बाँट

परहित में जेकर जिनिगी बा
उनुके बसुधा से जनि छँटऽ ।
अब धरती के.....।

ई धरती पुरुखन के थाती
अनगिन नदिया इनिके छाती
नाना दु:ख सहि बहल करेली
जन - जन के हर ताप हरेली
गांज लगा कूड़ा करकट के
तू इनिकर पेटा जनि पाटऽ
अब धरती के.....।

टुके - टूक करि दिहलऽ धरती
बाग बगइचा भइलन परती
सगरी जल के सोत झुराइल
ताल - तलैया कुंआ सुखाइल
जलवे बा जिनिगी अदिमी के
बनि अगस्त इनिके जनि चाटऽ
अब धरती के.....।

ठावां- ठाईं बाँध बनवलऽ
कचरा के तू ढेर लगवलऽ
टूटल जाला सुरसरि प्रवाह
ई रेत बनल ओकर गवाह
हर जिनिगी के उजरल खोंता
जुग - जुग के नाता जनि काटऽ

अब धरती के.....।

जो अब जल के बांटल जाई
आ जिनिगी से छांटल जाई
पीटल जाई भले ढिंढोरा
प्रकृति के उठि चली सिन्होरा
जे जल के महिमा गावत बा
कम से कम उनुके जनि डांटऽ
अब धरती के.....।

जो इहवां सुरसरि ना बहिहें
बसुधा पर जीवन ना रहिहें
सूरज के ना ताप सहाई
जरि के सजे खाक हो जाई
'कश्यप' जन जीवन के खातिर
लिखि कागज पर सगरो साटऽ
अब धरती के.....

सुशीला पाल

बलिया- उत्तर प्रदेश

सुशीला पाल

झूमर

सइयाँ हो गइले सराबी : जीयल मुसकिल !! - 2

खेत - खरिहान - बारी / बेंचि दिहले सगरी
घर आ दुआर बेचले / रहीं कवने कगरी
-- केकरा से माँगीं खाये खाती तील- तील !!
सइयाँ...

काड़ा - छाड़ा - हँसुली बेचले / बेचले लोटा - थरिया
बेंचि दिहले कूल्हि ऊ / ले जाइके बजरिया
-- हमरे नसीब बिधना ठोकि दिहले कील !!
सइयांॅ...

जूठ - काठ माँजि / दूइ रोटी हम जुटावेलीं
मूँह देखि लइकन के / दुख बिसरावेलीं
-- मन करे जाके डूबि जाईं कवनो झील !!
सइयाँ...

पीये खाति रोकेलीं तऽ / दोषिहा बनावे ले
'बोलबू तऽ फूँकि देबि जीयते' / धिरावेले
-- रोजे - रोजे हमनीं के करेले जलील !!

शशि प्रेमदेव
प्रधानाचार्य
कुँवर सिंह इण्टर कॉलेज, बलिया

शशि प्रेमदेव

नदियन के दुर्दसा प गीत

भोगि रहल बा नाजे केकर / करनी कइल नदी !
-- जनमे से रहि गइल परवारत / सबकर मइल नदी !!

उजरि गइल सज्जी सुघराई
कइसन रोग लगल !
लउके ना सुध लेबे वाला
केहुए अगल - बगल !
-- रहल कबो चन्नन, अब तऽ / लागे मँगरइल नदी !!

कइलस पाप कवन अइसन जे
किसमत फूटि गइल !
नइहर से दुत्कार मिलल, आ
ससुरो छूटि गइल !
-- टिकुली - सेनुर - चूड़ी अछइत / बिधवा भइल नदी !!

ईहे हाल रही त' आगा
करी भलाई के ?
परमारथ के हवन - कुंड में
हाथ जराई के ?
-- दुनिया का पाछा अमरित से / विष हो गइल नदी !!

शशि प्रेमदेव

प्रधानाचार्य
कुँवर सिंह इण्टर कॉलेज, बलिया

शशि प्रेमदेव

काहे मोर झुरा गइल गाल

काहें मोर झुराइल
राउर गाल गुलाबी बा ?
-- बोलीं, कवन खराबी बा ना ?
हमहूँ मनई, रउवो मनई
रउवा चन्नन - जस, हम कनई
-- रउवा छुट्टा चरलीं
मुँह पर हमरा जाबी बा !!
बोलीं, ...
रउवे पाले महल - अटारी
नोकर - चाकर - घोड़ा - गाड़ी
-- काहें पुहुत - पुहुत से
रउवे ठाठ नबाबी बा ??
बोलीं, ...
होयी कइसे सुफल सुराज
रउवे बोलीं ए, महराज
-- जबले लोकतंत्र के
सज्जी बात किताबी बा !!
बोलीं, ...
तूरब रावन के अभिमान
अब नइखीं हमहूँ अन्जान
-- कि कहँवाँ अमृत बाटे
कहवाँ राउर नाभी बा !!
बोलीं, ...

बृजमोहन प्रसाद अनारी

सुखपुरा- बलिया

बृजमोहन प्रसाद अनारी

तार भइल जिनगी

नदिया के गिरतऽ, आरार भइली जिनगी,
टुटल वीणा के तार भइली जिनगी ----------

धुरि में निखहरे, लइकन के सुतवली,
लइकन के माई लेवा पातरे ओढ़वली,
तबो जंतइले अइसन भार भइली जिनगी ------

तीन दिन के सुख नाहीं कहले कहालाऽ,
ओइसे डगराला जइसे सरसों छिटालाऽ,
मउवति के ऊपर सवार भइली जिनगी ----------

नाइ जइसे परेले, चकोह के भंवर में,
ओही तरे सोचे लगली दुरदिन के घर में,
बिना माझी के पतवार भइली जिनगी ----------

राती खा चान दिने सुरूज के रखवारी,
संग दिहलसि भूखि, बेमारी आ लाचारी,
सपना के संपति बेकार भइली जिनगी ----------

शालिनी श्रीवास्तव

लखनऊ- उत्तर प्रदेश

शालिनी श्रीवास्तव

बाबू जी

केहू फेरलस नजर केहू नजरिया बदल गईल
बात पे बात बढ़ल अउरी बढ़ते चल गईल

जेकरा बूता प जिये मुअला के सुर सधलें रहीं
छोड़ि के संग हमार उहे जिनगी छल गईल

खेल किस्मत के रहे कि खिसियाईल रहे जिनगी
सपना देखला से पहिले अंखियां मसल गईल

दांत काटि रोटी रहलन कबो जे हित हमार
ओहि के देख हमार आज तरक्की खल गईल

चैन फेरले बा आंखि चार पईसा के पाछा
शहर में गउंवा के इयाद फेर से मचल गईल

बखत गुजरला में बखत कहां लागेला
देखते - देखत दिन... महीना...साल इहो बदल गईल

शालिनी श्रीवास्तव

लखनऊ- उत्तर प्रदेश

शालिनी श्रीवास्तव

नज़र

ठेठाई के उमिर भर जांगर
अब, दुबराई गईलन बाबू जी
हमहन के सपना के बोझा ढोवत
झुकी गइल कंधा
देखते - देखत बुढ़ाई गईलन बाबू जी ।

चौखट प खड़ियाइल रहे, सांझ लेखा जिनगी
भीतर भरल बाटे ग्यान के चिनगी
किरिन डुबलो प दियना जराई गईलन बाबू जी

डेरात रहल जेसे, घर के हवा बतास
मनपसंद खाये से बेसी बा
उनके बतियावे के पियास
मुंहवा से अपना अकुताई गईले बाबू जी

मन के अंगनवा में, पसरल बा जून
बन्द बा, अचारे क भरुआ... छोला अ नून
रोगवा से केतने घेराई गईले बाबू जी

आंखी के बगइचा में, दु:ख भरल पतझर के
सब दिन एके सोझा न होला
दिन फिरला देह जांगर के
पतई नियर पियराई गइले बाबू जी ।

मनोज भावुक

कवि, संपादक आ टेलिविज़न पत्रकार

मनोज भावुक

भँवर

भँवर में डूबियो के आदमी उबर जाला
मरे के बा तऽ ऊ दरिया किनारे मर जाला

पता ई बा कि महल ना टिके कबो अइसन
तबो त रेत प बुनियाद लोग धर जाला

जमीर चीख के सौ बार रोके - टोकेला
तबो त मन ई बेहया गुनाह कर जाला

बहुत बा लोग जे मरलो के बाद जीयत बा
बहुत बा लोग जे जियते में, यार, मर जाला

अगर जो दिल में लगन, चाह आ भरोसा बा
कसम से चाँद भी अँगना में तब उतर जाला

सुनील कुमार यादव

प्रबंध संपादक

दीया बाती

भोजपुरी, तिमाही, ई पत्रिका

प्रबंधक - फीनिक्स इंटरनेशनल स्कूल

निमिया पोखरा- भगवानपुर, बलिया

सचल दूरभाष - 9839159190

सुनील कुमार यादव

आंखीं देखल, कान से सुनल

* जगह - बलिया कचहरी |
* तारीख - 04 दिसम्बर, 2024 |
* समय - लगभग 02:00 बजे | लंच के समय |
* घटना - मुवक्किल आ वकील के बातचीत | दरोगा जी के रौब | आरोपी के लटकल मासूम चेहरा |

(आरोपी आ मासूम ? हमके त पहिला नजर में मासूम ही लागल | पूरा पढ़ीं । हो सकेला कि रउवों हमरा बात से सहमत हो जाइब |)

* मुवक्किल - एगो छोट बच्ची, उमिर तकरीबन 10 - 12 साल |
* वकील - अधेड़ उमिर (शरीर देखला से 45+ के लागत रहलन |)
* आरोपी - 15 - 16 बरिस के एगो नाबालिग लइका |
* वकील साहब - सुन हेने !
* मुवक्किल - (वकील साहब के लगे आ के..) बताईं साहेब !
* वकील - मन परऽता नू कि जज साहेब के सोझा का कहे के बा ?
* मुवक्किल - हां, मन परऽता | जवन रउवां कहनी ह, हम कहि देब |
* वकील - बताउ त, का कहबे ?
* मुवक्किल - इहे कहब, कि राजू चाचा (सम्भवत: आरोपी के इहे नाम रहुवे |) हमरा के जमीनी प गिरा दिहले ह आ हमरा के एने ओने छुए लगले ह |

(कुछ देर रुक के |)

वकील साहब के बोलला से पहिले ही दुबारा मुवक्किल - बाकीर ऊ (आरोपी राजू) त राही में भेटाइल रहुवन त कुछू ना कहुवन | खाली कहुवन कि ऐने का करे आइल बाड़े ! बलुक हमरा के डटबो करुवन कि जल्दी घरे जो |

* वकील (खिसिया के) - ढेर बोलबू त अबे तहरो के बंद करवा देब | जेतना कहल जाता, ओतने करऽ |

अचानक,

दरोगा जी (उमिर लगभग 50 बरिस) हरकत में आ गउवन आ मुवक्किल के दादी (उमिर लगभग 65 बरिस) की ओर शेर नियन दहाड़त झपटुवन औरी...

* दरोगा जी - अरे ! बुढ़िया | बता दे ए छोकड़ी के कि जेतना कहल जाव ओतने बोलो | ना त अबे एकर कुल करम कर देब |

(मुवक्किल डेरा के अपना दादी के गोदी में बइठ गइल |)

* दादी - ना साहेब ! जवन रउवा कहब ई तवने कही | रउवां चिन्ता मत करी |
(औरी ओकरा बाद दादी मुवक्किल के डांटत आ पुचकारत एगो अइसन अपराध के कहानी गढ़े खातिर मुवक्किल के मना लेली जवन शायद घटिते नइखे भइल |

* हम - कानून के नवकी देवी के आंखी से पट्टी त हटा दिहल गइल बा बाकिर आंखी के रोशनी अब तक नइखे आइल | हाथ से तलवार हटा के पुस्तक पकड़ा दिहल गइल बा | ताकि अब औरी प्रेम से गला काटल जा सके |

साड़ी का रंग सफेद क दिहल बा ताकि न्याय के अर्थी निकलला प मातम मनावल जा सके |

हाथ में तराजू यथावत बा | ताकि रउवां समझीं कि न्याय मिले के प्रक्रिया एही तराजू नियन यथावत रही मतलब ई कि न्याय अभियो ना मिली |

जज साहब के कोर्ट रुम में आगमन ।
दूनों पक्ष के वकील साहब लो न्याय के संगे अन्याय करे खातिर कुछ जज साहब से कहल लो ।
जज साहब के भी शायद घरे जाए खातिर देरी होत रहुवे । ना माने 3 बज गइल रहुवे । त उहों के ओह आरोपी के अपराधी घोषित करत एक साल खातिर जमानत प रोक लगा दिहुवन ।

घटना दिमाग में घूम रहल बिया | बेर - बेर ऊ लइका के चेहरा आंखीं के सोझा आ जा रहल बा | नींद नइखे आवत | बेर - बेर ओह आरोपी लइका के भोकार पार के चिकरल आ कहल कि बुचिया ई का कइले ! हम तोर का बिगड़ले रहनी ह ! मन पड़ जाता आ हम बेचैन हो जातानी ।

बाकी शायद वकील साब, दरोगा जी आ जज साहब आजु चैन के नीन सूती लो | तीनों जाना एगो केस के ठिकाना लगावे खातिर दिन भर कड़ा मेहनत जे कइले रहुवे लो |

योगः कर्मसु कौशलम्

9839159190

फ़ीनिक्स स्कूल

- ★ अनुशासित वातावरण
- ★ योग्य एवं प्रशिक्षित शिक्षक
- ★ शत-प्रतिशत परीक्षाफल
- ★ क्रियाकलाप आधारित शिक्षा
- ★ वैदिक गणित एवं अबाकस कक्षाएं

Science | Commerce | Humanity

कक्षा- नर्सरी से (10+2)

प्रवेश प्रारम्भ

2026-27

साक्षी तिवारी
जिला टॉपर (Hindustan Olympiad)

जया वर्मा
जिला टॉपर (PCM)

मुख्य शाखाः निमिया पोखरा (कटरिया), अलावलपुर- बलिया | शाखाः कृष्ण-सुदामा नगर (भगवानपुर)- बलिया

GSTIN.: 09AEAPY1980M1ZT

9140302496
8004776005

PRATAP

PRATAP ENTERPRISES

Paswan Gali, Garwar Road, Mulayam Nagar, Ballia

राजेश भोजपुरिया

जमशेदपुर- झारखण्ड

राजेश भोजपुरिया

स्मृति शेषः गंगा प्रसाद अरूण

कवि, गीतकार व साहित्यकार श्री गंगा प्रसाद अरुण के जन्म 4 जनवरी 1947 के ग्राम पड़रिया, पोस्ट- बुढ़वल, थाना - काराकाट, जिला रोहतास, बिहार में भइल रहे ।
पढ़ाई लिखाई बुढ़वल उच्चतर माध्यमिक विद्यालय से उच्चतर माध्यमिक 1965 में, करीम सिटी कॉलेज, जमशेदपुर से स्नातक हिन्दी प्रतिष्ठा 1971 में (राँची विश्वविद्यालय में प्रथम श्रेणी में द्वितीय स्थान) भइल ।

आजीविका :- टाटा मोटर्स, जमशेदपुर से प्रबंधक (शिक्षा आ सामुदायिक सेवाएं) पद से 4 जनवरी 2007 में सेवानिवृत्त भइल रही ।

साहित्य सेवा :- भोजपुरी / हिन्दी में इहां के कलम खूब चलत रहे ।
गंगा प्रसाद अरुण जी के साहित्य विधा गीत, नवगीत, गजल, हाइकु, मनगीत के अलावा छंद - बद्ध, छंद मुक्त काव्य रचना आ ललित गद्य रहे ।

इहां के अब तक के प्रकाशित किताबन में :-
- हहरत हियरा, भोजपुरी गीत संग्रह -1974,
- तिरती सी परछाइयाँ, हिन्दी गीत - नवगीत संग्रह - 2002,
- अंगना महुआ झरल, भोजपुरी गीत - नवगीत संग्रह - 2010
- तीन डेगे त्रिलोक, भोजपुरी हाइकु / हाइकु गीत संग्रह - 2013,
- गजल गवाह बनी (भोजपुरी हस्तलिखित गजल संग्रह - 2018)
- प्रेम न बाड़ी ऊपजै (भोजपुरी मदन लेख - 2020)
- मनुवां मनगीत लिखे (भोजपुरी मनगीत - 2021)
- द्वंद्व समास (भोजपुरी ललित गद्य - 2021) प्रमुख बाड़ी सन ।

इहां के प्रकाशन खातिर कुछ संग्रह तइयार बाड़ी सन । अरुण जी कई गो किताब आ पत्रिकन के सम्पादन - सम्पादन सहयोग कईले रही, जवना में :-
पत्रिका :- लकीर, लुकार, विकास वार्ता, पर्यावरण चिंतन, रचनाकार, लुकार (स्वर्ण जयंती अंक), इस्पातिका (स्मारिका), माई के बोली (स्मारिका), विदूषक, पारिजात कल्प, मानवी, निर्भीक संदेश, इस्पात भारती इत्यादि ।

पुस्तक :- हरिशंकर वर्मा स्मृति ग्रन्थ, निर्भीक अभिनन्दन ग्रन्थ, अगुआ (लघुकथा संग्रह), बिना के तान, सुपुली भर तरेगन, डॉ परमेश्वर दूबे शाहाबादी के शोध ग्रन्थ आ नवगीत संकलन 'फूल हरसिंगार के' के संपादन प्रमुख बा ।

अरुण जी के रचना - प्रसारण, प्रकाशित आ प्रस्तुति :-
आकाशवाणी के विभिन्न केन्द्रन से, दूरदर्शन पर, झारखण्ड, बिहार, पश्चिम बंगाल, उत्तरप्रदेश, ओड़िसा के विभिन्न काव्य मंचन से अपना रचना के सस्वर प्रस्तुति ।

स्थानीय पत्र पत्रिकन के अतिरिक्त सुरसती / प्रत्याभिता (सासाराम), परास (तेनुघाट), सम्मेलन पत्रिका (पटना), पाती (बलिया), समकालीन भोजपुरी साहित्य (देवरिया), कविता (पटना), खोइछा (आरा), भोजपुरी माटी (कोलकाता), बिगुल (सारण), भोजपुरी जिनगी (दिल्ली), समग्र दृष्टि (पुणे), संकल्प सौरभ (राउरकेला, ओड़िसा), बेला (मुजफ्फरपुर), उत्तर (मुजफ्फरपुर), पहचान (डेहरी आन सोन, रोहतास) के अलावा कई गो पत्र पत्रिकन में रचना प्रकाशित होत रहे ।

स्थानीय दैनिक अखबारन, हिन्दुस्तान, प्रभात खबर, जागरण, उदितवाणी, दैनिक भास्कर, चमकता आईना, न्यू इस्पात मेल, आज इत्यादि में शताधिक ललित गद्य - पद्य रचना प्रकाशित होत रहल बा ।

इहां के हाथे कई गो अभिनंदन पत्र लिखाईल रहे, जवन बहुत साहित्यकार लोगन के घर के दीवार पर आजो शुशोभित होई ।

कई गो पुस्तक पत्रिकन के आवरण चित्रण भी डिजाइन कइले रही - जइसे (लुकार, लकीर, विकासवार्ता, शाहाबादी रचनावली, पत्रावली : दिवंगत भोजपुरी सेविन के, हहरत हियरा, लकीर : कहानी संग्रह, पारिजात कल्प, मानवी, पर्यावरण चिंतन, स्टील सिटी समाचार, भोर (मगही), भोजपुरी लोक धारा, निर्भीक संदेश, रचनाकार, छितराइल फूल, तीन डेगे त्रिलोक इत्यादि ।

इहा के कई गो सम्मान से सम्मानित भी भइल रहीं, जवना में प्रमुख बा :-
- आचार्य महेंद्र शास्त्री पुरस्कार (अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन द्वारा गीत नवगीत संग्रह अंगना महुआ झरल खातिर)
- साहित्य सेवा सम्मान (जन कल्याण समिति, जमशेदपुर - 1997)
- साहित्य सम्मान (इस्पात भारती, जमशेदपुर - 2006 / 2015)
- भिखारी ठाकुर सम्मान (अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन, सासाराम - 2006),
- भोजपुरी सेवा सम्मान (विश्व भोजपुरी सम्मेलन, देवरिया /जमशेदपुर - 2009),
- भोजपुरी सेवी सम्मान (अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन, रायपुर - 2009),
- भिखारी ठाकुर सम्मान (कुतुबपुर / आरा - 2011),
- डॉ प्रभुनाथ सिंह सम्मान (विश्व भोजपुरी सम्मेलन, दिल्ली - 2011 / 2012),
- सरदार वल्लभ भाई पटेल सम्मान (श्रीकृष्ण सिन्हा संस्थान, जमशेदपुर - 2013),

- भोजपुरी सेवा सम्मान (अंतरराष्ट्रीय भोजपुरी महोत्सव, जमशेदपुर - 2015)
- भोजपुरी सेवा सम्मान (प्रान्तीय भोजपुरी सम्मेलन, बोकारो - 2016)
- साहित्य शिरोमणि सम्मान (संकल्प संस्थान, राउरकेला - 2016)
- साहित्य सेवा सम्मान (लायन्स क्लब, जमशेदपुर - 2016)
- भोजपुरी सेवी सम्मान (लहरिया, भारती मीडिया एन्ड इंटरटेनमेंट, जमशेदपुर - 2016),
- डॉ प्रभुनाथ सिंह सम्मान, विश्व भोजपुरी सम्मेलन, दिल्ली - 2018,
- पाती अक्षर सम्मान , बलिया - 2018 / 19,
- प्रथम एकादश के लोकार्पण के अवसर पर सम्मान स्वरूप प्रतीक चिन्ह,
- अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के 27वां अधिवेशन 2023 जमशेदपुर में भोजपुरी सेवा खातिर सर्वतोभावेन माधव सिंह सम्मान । एकरा अलावा कई गो मंचन से सम्मानित भइल रहीं ।

अपना सम्पादन में लगातार भोजपुरी के अनियतकालीन पत्रिका 'लकीर' के नया आयाम देत रहीं । भोजपुरी के समर्पित पत्रिका "लकीर" के अब तक ले दस गो अंक निकल चुकल । साल 2023 में लकीर के दसवां अंक प्रकाशित भइल रहे । बहुत जल्दिये लकीर के अगिला अंक रउआ सभे के सोझा होई उम्मीद बा ।
बितल साल 2025 के 15 अगस्त के दिन इहा के निधन परिवार आ भोजपुरिया समाज खातिर असहनीय पीड़ादायक रहे । बाबूजी स्मृति में हरमेश बनल रहब ।

दीया बाती परिवार अपना प्रिय साहित्यकार के बेर - बेर नमन कर रहल बा ।

नबीन कुमार

बलिया/शारजाह

नबीन कुमार

भिखारी ठाकुर प पहिला शोध

भिखारी ठाकुर प जब जब कुछ आर्थेटिक आ सबसे पहिले तरिका से सैगर काम करे के बात होई त चार लोगन के नाव सबसे पहिले लेबे के चाहीं। हम तैयब जी के भिखारी ठाकुर प शोध के पढ़त रहनी ह, त शोध के पढ़े से पहिले इ विचार आइल ह। सोचनी ह कि एह जानकारी से रउवो सभ के परिचय करा दिहीं।

1- महेश्वराचार्य / महेश्वर प्रसाद
2- जेसी माथुर
3- रामसुहाग /रामसुभग सिंह
4- तैयब हुसैन पीड़ित

भिखारी ठाकुर प 1931 - 32 में पहिला लेख महेश्वराचार्य जी के आइल रहे आ भारत के नामी पत्र - पत्रिका में इहां के भिखारी ठाकुर के कृतित्व प लगातार लिखत रहनी। खास बात इहो बा कि भिखारी ठाकुर प सबसे पहिले दू गो किताब इहें के लिखले रहनी। एहू ले खास बात कि इहां के भिखारी ठाकुर से अक्सर मिलत रहनी। ध्यान रहे कि जवना घरी से महेश्वराचार्य जी भिखारी ठाकुर प लिखल शुरु कइले रहनी ओह घरी भिखारी ठाकुर जी के मंडली के उमिर मात्र 13 - 14 साल रहे।

जेसी माथुर, भिखारी ठाकुर के नाट्य मंचन के आधिकारिक रुप से सरकार के ओर से पहिला प्रस्तुति इहें के करवले रहनी। इहे ना, इहां के बहुत बड़हन लेख, भिखारी ठाकुर प लिखले रहनी। 'भरतमुनि के परम्परा' के कहि के इहां के भिखारी ठाकुर के सम्बोधित कइले रहनी। इहां के भिखारी ठाकुर के आटोग्राफ लेबे के बात बड़ा विस्तार से अपना लेख में लिखले रहनी।

भिखारी ठाकुर के पहिला साक्षत्कार लेबे वाला व्यक्ति रहनी रामसुहाग / रामसुभग सिंह जी। यानि कि सबसे पहिला आधिकारिक रुप से साक्षत्कार इहें के ले ले रहनी।

भिखारी ठाकुर प सबसे पहिला शोध करे वाला छात्र रहनी डॉ तैयब हुसैन पीड़ित जी। सन् 1981 में यानि कि भिखारी ठाकुर जी के निधन के लगभग 9-10 साल बाद, तैयब जी के शोध आइल रहे।

एह चार गो नाव के अलावा, बहुत लोग भिखारी ठाकुर प लिखल, उहां के नाटकन के मंचन कइल जवना में अविनाश चंद्र विद्यार्थी, रघुवंश जी से ले के संजय उपाध्याय जी जइसन नाव शामिल बा । बाकिर जदि सबसे पहिले केहू के काम के चर्चा होई त उपर के चार गो नावन के चर्चा जरुर होखे के चाहीं ।

[नोट - उपर के जानकारी, हमार निजी अध्ययन के आधार प बा, आ हो सकेला कि इ गलत होखे, जदि रउवा सभ के एह से कुछ अलग जानकारी होखे त ओह के प्रमाण सहित बतावल जाउ जवना से एह लेख में सुधार कइल जा सके ।

सुनील कुमार यादव

प्रबंध संपादक

दीया बाती

भोजपुरी, तिमाही, ई पत्रिका

प्रबंधक - फीनिक्स इंटरनेशनल स्कूल

निमिया पोखरा- भगवानपुर, बलिया

सचल दूरभाष - 9839159190

सुनील कुमार यादव

एगो जरूरी बात

आदरणीय व्यवसायी बंधु, संस्थान प्रमुख अउर सम्मानित पाठकगण,

रउवां सभके आदर सहित प्रणाम बा ।

गंवई संस्कृति, लोकभाषा अउर सामाजिक सरोकार के आवाज बन के निरंतर प्रकाशित हो रहल "दीया बाती" पत्रिका आज गाँव - देहात से लेके शहर तक हजारों पाठकन के दिल से जुड़ गइल बिया । ई पत्रिका साहित्य, शिक्षा, संस्कृति, किसान, महिला, युवा अउर समाज से जुड़ल विषयन पर सशक्त लेख प्रस्तुत कर रहल बिया ।

हम रउवां सबसे विनती कर रहल बानी कि रउवां अपना प्रतिष्ठान, उत्पाद भा सेवा के प्रचार - प्रसार खातिर "दीया बाती" पत्रिका में विज्ञापन देके हमनी के सहयोग करीं । आपके विज्ञापन से एक ओर जहाँ आपके व्यवसाय के पहचान गाँव - गाँव तक पहुँची, ओहिजे दुसरी ओर लोकभाषा अउर ग्रामीण पत्रकारिता के मजबूती भी मिली ।

दीया बाती में विज्ञापन दिहला से रउवां सीधे - सीधे जागरूक पाठक वर्ग तक पहुँच जाइब, जवन आप पर भरोसा करे ला । ई ना खाली व्यापारिक लाभ देला, बलुक समाजिक दायित्व निभावे के अवसर भी देला ।

आईं,

दीया बाती के उजाला में आपन नाव, आपन काम अउर आपन पहचान चमकाईं ।विज्ञापन संबंधी जानकारी अउर दर खातिर हमनी से संपर्क करीं ।

राउर सहयोग के प्रतीक्षा में,

दीया बाती परिवार.

योगः कर्मसु कौशलम्

9839159190

फ़ीनिक्स स्कूल

कक्षा- नर्सरी से (10+2)

★ अनुशासित वातावरण
★ क्रियाकलाप आधारित शिक्षा
★ योग्य एवं प्रशिक्षित शिक्षक
★ वैदिक गणित एवं अबाकस कक्षाएं
★ शत-प्रतिशत परीक्षाफल

निःशुल्क
प्रवेश प्रारम्भ
2026-27

Science
Commerce
Humanity

जया वर्मा
जिला टॉपर (PCM)

सादी तिवारी
जिला टॉपर (Hindustan Olympiad)

मुख्य शाखाः निमिया पोखरा (कटरिया), अलावलपुर- बलिया
शाखाः कृष्ण-सुदामा नगर (भगवानपुर)- बलिया